जापान

जापान

के

कुछ प्रसिद्ध लेख

अगस्त १९४१] **देश-दर्शन** [भाद्रपद १९९८

(पुस्तकाकार सचित्र मासिक)

वर्ष ३] [संख्या २

जापान

सम्पादक
पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०

प्रकाशक
भूगोल-कार्यालय, इलाहाबाद

Annual Subs. Rs. 4/-
Foreign Rs. 6/-
This Copy As -/6/-

वार्षिक मूल्य ४)
विदेश में ६)
इस प्रति का ।=)

विषय-सूची

स्थिति

स्थिति तथा विस्तार

जापान पूर्वी एशिया का एक बड़ा साम्राज्य है। यह संसार के शक्ति शाली राष्ट्रों में गिना जाता है। यह प्रशान्त महासागर में कमस्कटका और मलक्का के मध्य स्थित है। जापान का साम्राज्य ३७°१४' अंश देशान्तर और २६°३२' अक्षांस के मध्य फैला है। इसके धुर उत्तर में क्यूरायल का द्वीप और दक्षिण में फारमूसा द्वीप है। जापान में ६ बड़े द्वीप हैं जिनके नाम सारवालिन (जापानी काराफूटो कहते हैं) एजो, हांशू या हौंडो शिकोकू क्यूशू और फारमूसा हैं। फारमूसा और पेस्काडोर्स द्वीप को १८६४-६५ के युद्ध के पश्चात् चीन ने जापान को दिया था और सारवालिन का दक्षिणी भाग जापान को १६०५ ई० में रूस से प्राप्त हुआ था।

जापानी साम्राज्य का क्षेत्रफल दो लाख साठ हज़ार तीन सौ उन्नासी वर्गमील है। लिआवतुंग प्रायद्वीप का क्षेत्रफल १४३७ वर्ग मील हैं और उसमें १२३ मील शामिल हैं। हांसू द्वीप में १६२ छोटे द्वीप शामिल हैं और क्षेत्रफल ६१२७८ व० मी० है। शिकोकू द्वीप में

७५ द्वीप हैं और क्षेत्र फल ७२४६ व० मील है। क्यूशू द्वीप में २१३ छोटे द्वीप शामिल हैं और क्षेत्रफल १४७१८
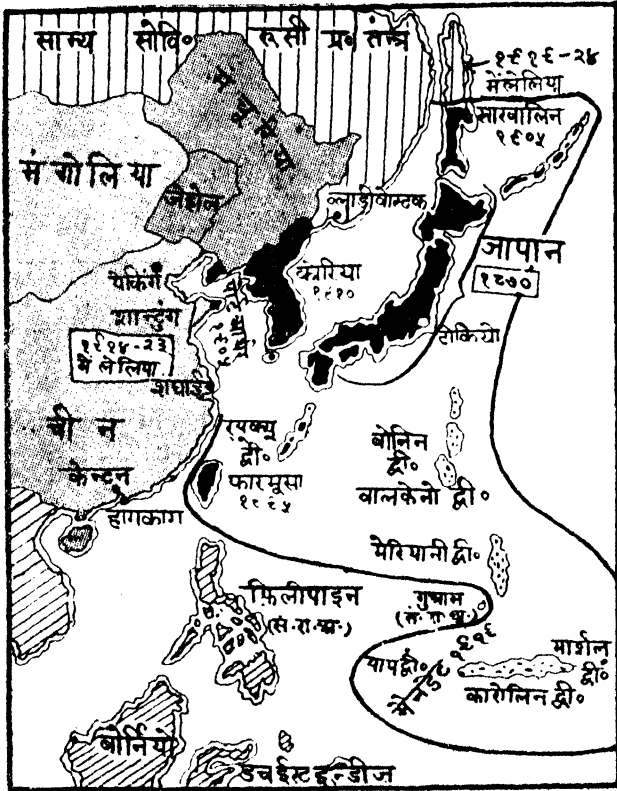
जापानी साम्राज्य

वर्ग मील है होकैडो द्वीप में ४४ द्वीप हैं और क्षेत्रफल ३४०८४ वर्ग मील है। कोरिया (१६१० में मिलाया

जापान में एक नये द्वीप की सृष्टि

साइबेरिया

मन्चूरिया

चीन

जापान सागर

गया) में १०१८ द्वीप हैं और क्षेत्रफल ८५२२८ वर्ग मील है। सारवालिन द्वीप में दो छोटे द्वीप शामिल हैं और क्षेत्रफल १३६३४ व० मील है। फारमूसा और पेस्कोडा में ७७ द्वीप शामिल है और क्षेत्रफल १३८८६ वर्ग मील है।

जापान का समुद्र तट बहुत लम्बा है। पूर्वी प्रशान्त महासागरीय तट की लम्बाई १०५६२ मील और पश्चिमी जापानी तट की लम्बाई २८८७ मील है। प्रशान्त महासागर की गहराई जापानी सागर की अपेक्षा अधिक है। सबसे अधिक उसकी गहराई २७६३० फुट है। यह गहराई संसार में सबसे अधिक है। इसे टस्कारोरा गहराई कहते हैं। यह गहराई टस्कारोरा नामक संयुक्त राष्ट्र के व्यक्ति के नाम पर पड़ा है। उसी ने इस गहराई की खोज की थी। इसी गहराई के नीचे ज्वालामुखी पर्वत है जिसके कारण जापान के अधिकांश भूकम्प आते हैं। जापान सागर की औसत गहराई ३६०० फुट है। पूर्वी तट में टोकियो तक में तीन (संडाई, मतसुशिया यामाडा) बड़ी खड़ियां हैं।

टोकियो से और दक्षिण की ओर सगामी, सुरूंगा, ईसे, ओसाका, काई, तोसा आदि खाड़ियां हैं। शिकोकू

और क्यूशू को एक दूसरे से तथा मुख्य जापान से अलग करने वाला संसार का सबसे सुन्दर भीतरी सागर है। यह सागर प्रशान्त महासागर और जापान सागर से शिमोनोसेकी, हयामोटो, यूरा और नरुतो जल संयोजकों द्वारा मिला हुआ है। क्यूशू तट और कोरिया प्रायद्वीप के मध्य इकी और सुसिम के द्वीप स्थित हैं। सुरुगा बन्दरगाह से या वाकासा खाड़ी से ओसाका तक जापान की चौड़ाई केवल ७७ मील है। यूचीअरा, नेमूरो और इशोकारा की खाड़ियां बड़ी सुन्दर तथा उपयोगी हैं। पेस्काडोर्स में जहाजों के ठहरने के लिये सुन्दर स्थान हैं।

देश दर्शन

पर्वत

जापानी द्वीपों में पर्वत उत्तर से दक्षिण को फैले हैं। ऊँचे पर्वत निचले घाटों (दर्रों) द्वारा अलग हो गये हैं। जापान की अधिकांश भूमि पहाड़ी है केवल आठवें भाग में खेती होती है। जापान का सब से ऊँचा तथा बड़ा पर्वत फूजीयामा या फूजीसान है। इसकी सबसे ऊँची चोटी १२२९५ फुट है। प्राचीन काल में लावा की बड़ी बड़ी धाराएँ चोटी के मुख से बहा करती थी। उनमें से एक धारा का मार्ग अब भी १५ मील तक दिखाई पड़ता है शेष धाराएँ समतल हो गई हैं। फूजी पर्वत दक्षिण की ओर ढालू होता हुआ समुद्र के भीतर समा गया है शेष तीन ओर मैदान है जहां से यह पर्वत आरम्भ होता है। उस बड़े मैदान के चारों ओर पर्वत हैं। मैदान के उत्तर और पश्चिम की ओर सुन्दर झीलें हैं। १५०० फुट की ऊँचाई तक पर्वतों में खेती की जाती है और २५०० फुट की ऊँचाई तक दलदली घास के मैदान पाये जाते हैं। ८००० फुट की ऊँचाई तक बन फैले हुये हैं। बनों के आगे प्राचीन लावा की राख तथा कीट वाले स्थान हैं।

जापानी अल्प्स हीया और एट्चू के प्रान्त पूर्व की ओर पर्वतीय श्रेणियों से घिरे हैं। उनके समीप जापान की अधिकांश ऊँची चोटियां हैं। इन में से छः चोटियां
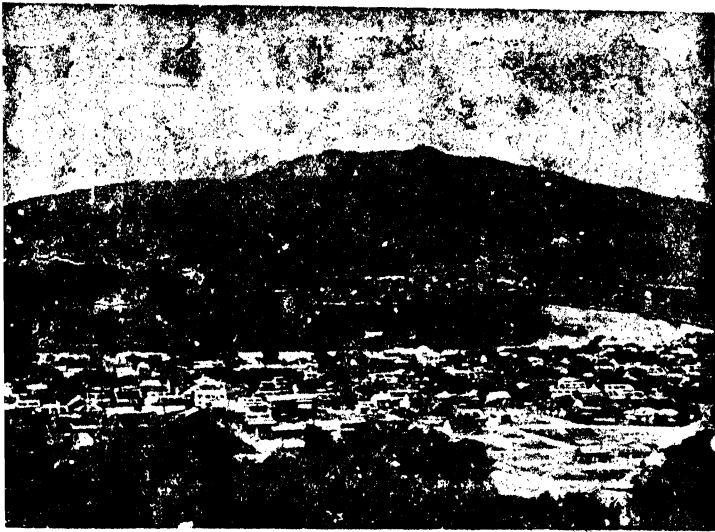
जापान के प्रसिद्ध पर्वत फ्यूज़ीयामा का एक दृश्य

६ हजार अथवा उससे कुछ अधिक ऊँची हैं। नोरीकूरा और तातेयामा नामक पर्वतों के देखने से पता चलता है कि इन पर्वतों की रचना अभी हाल में ज्वालामुखी पर्वतों के कारण हुई है। फूजी पर्वत पर चढ़ने में किसी

प्रकार की कठिनाई नहीं होती है। याकोहामा बन्दरगाह से गोतेम्बा को रेल द्वारा यात्री जा सके हैं वहां से पहाड़ पर चढ़ने या उतरने की यात्रा पैदल एक दिन में समाप्त

की जा सकती है। नोरीकूरा पर्वत के और अधिक दक्षिण की ओर आनढेक पर्वत है जो जापान का दूसरा

ऊँचा (१०,४५०) फुट पर्वत है। इसी प्रदेश में और दूसरी पर्वतीय चोटियां हैं। इसी पर्वतीय श्रेणी को जापान का अल्प्स कहते हैं। यह प्रदेश बड़ा सुन्दर है। आल्प्स से कुछ कम ऊँचा परन्तु उसी भांति सुन्दर तथा रमणीक निक्को पर्वत है जिनको पर्वत में शिरानेसान (७४२२ फुट) ननताई सान (८१४६ फुट) न्योहो-जान (८१०० फुट) और ओमँगो (७५४६ फुट) चोटियां हैं। इन पर्वतों पर सब कहीं सुन्दर बनस्पति पाई जाती है। झरने तथा नदियां भी इस भाग में बहुत हैं।

प्रधान जापान (द्वीप) के उत्तर में कोई विशेष ऊँची चोटी नहीं है। उत्तरी भाग में चोकीज़ान गंजूसान इवाकी सान, गासन और हगूरासान की चोटियां हैं कुछ और दक्षिण की ओर ऐज़ू के उपजाऊ मैदान को ईदीसान, अज़ूमायामा की चोटियां घेरे हुये हैं। अज़ूमा यामा एक ज्वालामुखी चोटी है। नासूडेक नामक पर्वत से अब भी आग-धुआं निकला करता है। बन्दैसान पर्वत बहुत समय तक शान्त रहा और उसके समीप बस्तियां बस गई थीं परन्तु १२८८ ई० में वह एका एक फूट निकला उसकी लावा और गरम राख में ७ गाँव

नष्ट हो गये थे। अकगीसान, असमायाप, अकगीसान हसण श्रेणी, म्योगीसाम, शिरानेसेन ओदैगहरा, इशीज़ूची
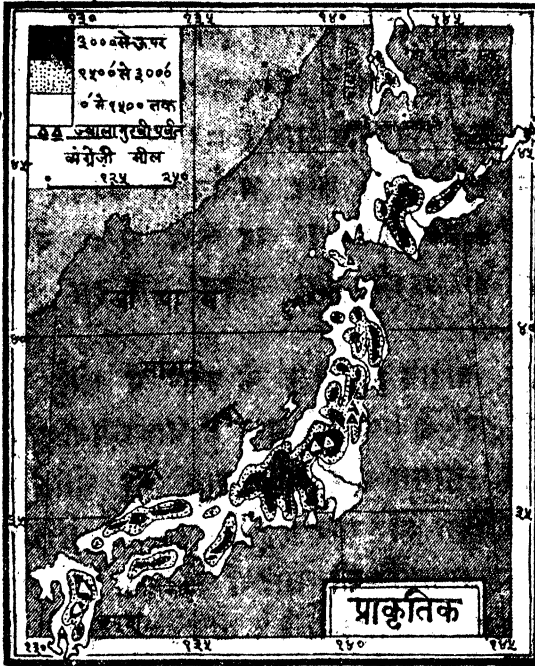
सान, फ्यूजेनडेक, असोटेक, कृष्मायाम, तकाचीहो डेक आदि जापान के दूसरे प्रसिद्ध पर्वत हैं।

ज्वालामुखी पर्वत

जापानी पर्वतों में तीन ज्वालमुखी श्रेणियां हैं जिनके नाम कूरीलेस, फूजी और कृष्मा हैं इन श्रेणियों में लगभग २०० ज्वालामुखी पर्वत हैं जिनमें ५० ऐसे जिनसे बराबर आग धुँआं निकला करता है। फूगी की ज्वालमुखी चोटी सबसे विचित्र है। जापानी लोग इस चोटी को बहुत पवित्र मानते हैं। और ग्रीष्म काल के मध्य में वहां दर्शन के लिये जाते हैं। उसके मुख की गहराई ५०० से ६०० फुट तक मानी जाती है। यह प्रतीत होता है कि यह आग्नेय पर्वत सदैव के लिये शान्त हो गया है परन्तु अनुभव से पता चलता है कि जापान के आग्नेय पर्वतों का कोई निश्चय नहीं है कि वह किस समय फुट पड़े। और सत्यानाश कर डालें।

जापान के इतिहास में बहुत से ज्वालामुखी स्फोटनो का वर्णन किया गया है। सबसे अंतिम स्फोटन १७०७ ई० में हुआ था। उस समय समस्त चोटी फट गई थी और आग की चिंगारियां चारों ओर फैल गई थीं। चारों ओर राख फैल गई थी। टोकियो वहां से ६०

मील की दूरी पर है परन्तु टोकियो भी कई इंच मोटी राख जा गिरी थी। मुख से लावा की धारा वह निकली थी। वर्तमान जापान आग्नेय पर्वतों में तारूमै (टोक़ो) नोबोरी बेपूसू कोमगटेक, एसान, अगटसूया, हवा की (१९०३ ई० में फूटा था) बन्दैमान (इवासीरो १८८८ में फूटा था और २७ वर्गमील भूमि नष्ट किया) अटज़ूम यम (१९०० ई० में फूटा था) नासू शिताने (अंतिम स्पेटन १८८९ ई०) शिराने (१९०५ में स्फोटन हुआ था जब कि मुख की लम्बाई ३००० फुट हो गई थी) अंजेन, असोसन (इसका मुख १० से १५ मील तक है और २१०० फुट तक ऊँचा है यह संसार में सबसे बड़ा ज्वालामुखी पर्वत है) कैमोन, सकूराजीमा (१९१४ में स्पोट हुआ था। कृष्णा मीहर ऽरीस द्वीप में है और सदैव आग धुँवां निकला करता है) और असमा है। असमा आग्नेय पर्वत सदैव जाग्रत रहता है।

भूकम्प

जापान में भूकम्प बहुत आया करते हैं। १८८४ से १८९७ ई० तक में जापान के अन्दर छोटे बड़े १७,७५० भूचाल आये। इस प्रकार ३½ भूकम्प प्रति दिन का औसत पड़ा। १८९७ ई० के पहले तीन सौ वर्षों में जापान में १०८ बड़े बड़े भूकम्प हुये जिनका इतिहास में नाम प्रसिद्ध है आठवीं सदी से अब तक में जापान के अन्दर २,०० बड़े भूचाल आ चुके हैं। भूचाल के आने से जान व माल की बड़ी हानि होती है इसी कारण जापानी लोग लकड़ी तथा कागज़ के मकान बनाते हैं।

१७०३ ई० में टोकियो में एक भूकम्प आया जिससे २० हज़ार घर नष्ट हुये और प्रायः २० हज़ार जाने गईं। १७०७ ई० में प्रशान्त महासागर के क्यूशू और शिकोकू तट पर भूकम्प आया जिससे २९ हज़ार घर नष्ट हुये और लगभग ५ हज़ार व्यक्ति मरे। १७५१ ई० में एचीगो में भूकम्प आया जिससे प्रायः ९ हज़ार घर नष्ट हुये और १७०० व्यक्ति मरे। १७६६ ई० में हिरोमाकी में भूकम्प आया जिससे साढ़े सात हज़ार घर

नष्ट हुये और लगभग १३०० व्यक्ति मरे। १७९२ ई० में हीज़ेन और हीगो में भूचाल आया जिससे १२ हज़ार घर और १५००० जाने बरबाद हुई। १८१८ ई० में एचीगो में भूचाल आया जिससे लगभग १२ हज़ार घर और लगभग १५०० जाने नष्ट हुई १८४४ ई० के एचीगो के में ३४ हजार घर तथा १२ हजार जानें नष्ट हुई। १८५४ ई० में यायातों और ईगा द्वीपों में भूकम्प आया जिससे ५ हजार घर गिर गये और ढ़ाई हज़ार व्यक्ति मरे १८५४ में टोकैडो में दूसरा भूकम्प हुआ। जिससे ६० हजार घर नष्ट हुये और तीन हज़ार जाने गईं। १८५५ ई० में टोकियो में भूचाल आया जिससे ५० हज़ार घर नष्ट हुये और ६७०० जानें मरीं। १८९१ ई० में मीनो और ओवारी में भूचाल आया जिससे २,२२,५०१ घर नष्ट हुये और ७२८३ जानें गईं। १८९९४ ई० में शेनाई में भूचाल आया जिससे साढ़े आठ हज़ार घर नष्ट हुये और ७२६ जानें गईं। १८९६ ई० में सनरीकू में भूचाल आया जिससे १३ हज़ार घर नष्ट हुये और २७१२२ जाने गई। १८९६ ई० में एक दूसरा भूकम्प युगो, रिकूचू में आया जिसके कारण
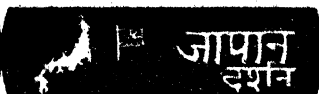
८६६६ घर नष्ट हुये और २०६ मनुष्य मरे। १६०६ ई० में फारमूसा में भूकम्प आया जिससे ५५५६ घर नष्ट हुये और १२२८ जानें गईं। १६२३ ई० में सगामी की खाड़ी में भूकम्प हुआ जिससे ५५८०६४ घर नष्ट हुये और ६१३४४ जाने गईं। इस भूकम्प में टोकियों का तिहाई भाग और समस्त याकोहामा का बन्दरगाह नष्ट हुआ था। भूकम्प के कारण भीषण अग्निकाण्ड भी होगया था। १८५५ ई० के पश्चात् यह दूसरा विकराल भूकम्प था इस भूकम्प में जानों के अतिरिक्त कला-कौशल की वस्तुओं का नाश हुआ कि जिसका मूल्य लगाना कठिन है। १६२५ ई० में तजीया में भूचाल आया जिससे ३६६८ घर नष्ट हुये और ३८१ व्यक्ति मरे। १६२७ ई० में तांगो में भूकम्प आया जिससे ७३६७ घर नष्ट हुये और लगभग ३ हज़ार जाने गईं।

जापान के प्रशान्त महासागरीय तट पर पश्चिमी तट की अपेक्षा अधिक भूकम्प आते हैं। इस बात का काफ़ी सबूत है कि प्रशान्त महासागरीय भूचालों की उत्पत्ति समुद्र के तल से होती है। तुस्कारोरा की गहराई भूकम्प उठने का केन्द्र है।

मैदान तथा नदियां

जापान में नदियां बहुत हैं। वर्षा ऋतु में और जब जाड़े की बरफ पिघलती है तो नदियों में पानी अधिक हो जाता है। दूसरी ऋतुओं में वही नदियां प्रायः नाले बन जाती हैं। जापानी नदियां अधिक लम्बी तथा बड़ी नहीं हैं। पहाड़ी होने के कारण उनमें नावें नहीं चलती हैं। इशीकारी (२७५ मील) तेशिओ (१६२ मील) तोकाची (१२० मील) शिनानो (१२६ मील) तोने (२०० मील) किताकामी (१२५ मील) कीसो (१४४ मील) तेनरियो (१३४ मील) मोगामी (१३४ मील) गोनो (१२४ मील) अबूकूमा (१२२ मील) अगानो (११५ मील) और योशीनो (१४६ मील) आदि जापान की बड़ी नदियां हैं।

यद्यपि जापान एक पहाड़ी देश है तो भी वहां कुछ बड़े बड़े मैदान हैं। उत्तरी द्वीप एज़ो में ७ मैदान है। मुख्य जापान द्वीप और दक्षिणी द्वीप में भी बहुत मैदान हैं। उत्तरी द्वीप के मैदानों का क्षेत्रफल ३,३७,३००० एकड़ है और उसमें तोकाची, इशीकारी, कशीरो, नेमूरो
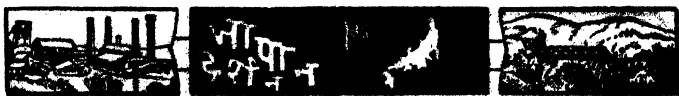
कितामी, हिदाका तेशिओ आदि मैदान हैं। प्रधान द्वीप में एचीगो सेंदाई, क्वांटो (जिसमें टोकियो राजधानी है। मीनोओवारी, कीनाई (जिसमें ओसाका, क्यूटो और कोबे नगर हैं। क्यूशू द्वीप में सुकूशी नामक मैदान है कूशीरो, तोकाची और इशीकारी के मैदान बड़े और हैं जिनका क्षेत्रफल क्रमशः १,२२६,०००, ७४४,००० ४८०,००० एकड़ है।

झीलें तथा झरने

जापान में बहुत सी झीलें हैं। वह झीलें अपनी सुन्दरता के लिये प्रसिद्ध हैं। कुछ झीलें नदियों की घाटियों में हैं और कुछ अग्नेय पर्वतों के स्फोटन से बनी है जापानी झीलों को देखने के लिये विदेशी लोग ग्रीष्म काल में जाया करते हैं। हकोने, चूज़ेन्ज़ी, शोजी, इनावा शीरो (यह बन्दैसान के १८८८ ई० के स्फोटन से बनी है) बीवानोजीरी, यूमोटो आदि प्रधान झीलें है जहां लोग गरमी के दिनों में आनन्द उठाने के लिये जाया करते हैं। यूमोटो झील सबसे अधिक उँचाई पर स्थित है। उसके बाद चूज़ेन्ज़ी झील की ऊँचाई ४३५५ फुट है चूज़ेन्ज़ी झील की गहराई ५५८ फुट है। इस झील का पानी केगोन के २५० फुट ऊँचे प्रपात से खाली होता है। फूजी पर्वत के चारों ओर जो झीलें हैं उनमें शोजी का काम सबसे अधिक प्रसिद्ध है। यह झील ३१६० फुट की ऊँचाई पर स्थित है। इस झील का समीपवर्ती स्थान बड़ा रमणीक है। हकोने झील २४२८ फुट की उंचाई पर है। इनावाशीरो १६२० फुट की और बीवा ३२८ फुट की उंचाई पर स्थित है। बीवा झील में

आठ सुन्दर दृश्य देखने को मिलते हैं। मूवा झील शिनानो में है। यह २६२४ फुट की उंचाई पर है। इस झील का पानी तेनरियूगावा नामक नदी द्वारा बाहर जाता है। इन पर्वतीय झीलों के समीप उष्ण पानी के सोते पाये जाते हैं जिनके पानी में भांति भांति के रोगों को अच्छा करने वाली शक्ति पाई जाती है।
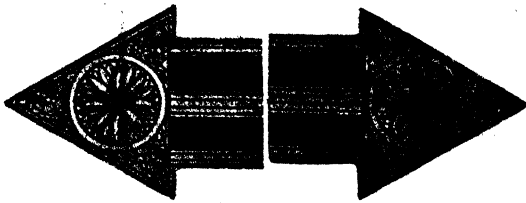
जापानी बालक

संसार भर में जापानी बच्चों का जीवन सबसे अधिक सुखी होता है। जापानी माता-पिता अपने बच्चों की बड़ी देख भाल करते हैं इसी कारण जापानी बच्चे अच्छी प्रकृति के होते हैं। जापानी लड़कियां तथा लड़के, युवा, स्त्री, पुरुषों की भांति बड़े शान्त होते हैं जापानी बच्चों को बालपन ही से अपनी इच्छाओं पर अधिकार करना सिखाया जाता है। आपत्ति के समय उन्हें खुश रहने के लिये कहा जाता है क्योंकि यदि वह रोवेंगे या उदास रहेंगे तो वह दूसरे लोगों को देखने या सुनने में बुरे लगेंगे। यदि बहुत खुशी का अवसर होता है तो भी उन्हें ज़ोर से हंसने या चिल्लाने के लिये मनाही की जाती है क्योंकि ऐसा करना असम्भव समझा जाता है। इस प्रकार जापानी बच्चे शान्त, सुशील और नम्र होते हैं।

बालपन में बच्चे भांति भांति के खेल खेला करते हैं। गलियों में बच्चे अपने खेल खेला करते हैं। गलियां ही उनके खेल के मैदान का काम देती हैं।

जापानी लड़कियां अपने छोटे भाई तथा बहिन (छोटे बच्चों) को अपनी पीठ पर बांध कर खेलती हैं। जापान में बच्चों को हाथ में लेकर खेलाने का रिवाज़ नहीं है केवल धनी घरों की दाइयां ही बच्चों को गोद में लेकर खेलाती हैं। बच्चा मां अथवा बहन के कंधे पर शाल से बंधा रहता है। लड़की बच्चे को बांधे हुये, दौड़ती खेलती और उछलती कूदती है। बच्चा उसी दशा में खेल देखा करता है और कभी कभी सो जाता है। जापानी लड़के तथा लड़कियाँ एक सा ही भेष धारण करते हैं। उनका वस्त्र उनके माता पिता की भाँति ही बना रहता है। जापान के बच्चों के लिये अलग वस्त्र नहीं होते हैं।

जापानी बच्चे किमोनो (एक प्रकार का साया) पहिनते हैं। बाहरी किमोनो के नीचे एक दूसरा किमोनो पहिना जाता है। किमोनो को कमर में एक पट्टा से बांधते हैं जिसे ओबी कहते हैं। ओबी को जापानी लड़कियां बहुत प्यार करती हैं। धनी लोग अपने बच्चों के लिये रेशमी बेलबूटेदार कीमोनो खरीदते हैं। गरीब लोग भी बच्चों को अच्छे से अच्छा किमोनो खरीदने का प्रयत्न

करते हैं। लड़कियाँ अपने सिर के बालों को सीप, कछुए की खपड़ी, पिन और कँघे से सजाती हैं।

लड़कों की ओबी लड़कियों की भांति अधिक मूल्य की नहीं होती है। बालपन में लड़कियों का वस्त्र लाल और लड़कों का पीला रहता है। ५ वर्ष की अवस्था में लड़के पायजामा (हकमा) पहिनते हैं। पाँच वर्ष का हो जाने पर वह मन्दिर में उन देवताओं को धन्यवाद देने के लिये ले जाया जाता जिन्हों ने उसकी रक्षा ५ वर्ष की अवस्था तक की है।

जापानी बच्चे पैर में टाबी (सफेद मोजे) पहिनते हैं। इस मोजे में पैर की प्रत्येक अँगुली के लिये अलग अलग स्थान बने रहते हैं।

यह मोजे घर के बाहर मोजे का और अन्दर चप्पल का काम देते हैं। जापानी लोग घर के अन्दर जुते का प्रयोग नहीं करते हैं।

घर से बाहर जाते समय जापानी लकड़ी की खड़ाऊं पहिनते हैं घर आने पर वह खड़ाऊं को द्वार पर उतार देते हैं और केवल टाबी पहिने घर के अन्दर प्रवेश करते हैं।

जापानी लोगों के कपड़ों में जेब नहीं होती है। जो

कुछ वह अपने साथ ले जाना चाहते वह अपनी पट्टी या किमोनो में लपटा लेते हैं। साधारण लोग सादे सूती कपड़े का प्रयोग करते हैं।

जब जापानी बच्चे स्कूल पहुँचते हैं तो अपने अध्यापकों को झुक कर बड़ी भक्ति से प्रणाम करते हैं। और खींच कर सांस लेते हैं। अध्यापक भी झुक कर नम्रता के साथ प्रणाम स्वीकार करते हैं। उसके बाद वह बैठ कर अपना पाठ पढ़ते हैं जापानी लिखावट ऊपर से नीचे को होती है। उर्दू की भांति वह पहिले और उसे लिखते अथवा पढ़ते हैं। आरम्भ में बच्चे क़लम के स्थान पर ब्रश कंघी से लिखते हैं। जब चिट्ठी के ऊपर पता लिखना होता है तो पहले देश का नाम और अंत में पाने वाले का नाम लिखा जाता है।

जापानी बच्चों को हमारे यहां के बच्चों की भांति ही पाठशाला में भूगोल, इतिहास, अंकगणित, भाषा आदि पढ़ाया जाता है। घर पर माता पिता उन्हें शिष्टाचार की बातें सिखाते हैं। जापान में शिष्टाचार बहुत है। बच्चों को नम्रता सुशीलता के सिवा प्रणाम व नमस्कार के भांति भांति के ढङ्ग सीखने पड़ते हैं। बड़ों, बराबर

वाले और बच्चों के लिये अभिवादन करने के अलग अलग ढङ्ग होते हैं। उनमें पद तथा श्रेष्टता के अनुसार अलग अलग मिलने के नियम हैं। बच्चों को यह बातें बचपन से ही सिखाई जाती है इसलिये वह किसी प्रकार त्रुटि नहीं कर सकते हैं। जिस ढङ्ग से एक लड़की चाय का प्याला अपने मेहमान को देती है उसके ढङ्ग से ही उसके वर्ग की पहिचान होती है।

जापानी बच्चे को चलना, झुकना, साष्टांग प्रणाम करना और फिर उठना सभी कुछ सिखाया जाता है।

बच्चों का किसी से भेंट करने का नियम बड़ी सभ्यता से सिखाया जाता है। दूसरे के घर में प्रवेश करने का पाठ भी उन्हें दिया जाता है। एक बार एक दूकान पर एक विदेशी कुछ सामान लेने गया। जैसे ही वह दूकानदार के घर वाले सभी व्यक्तियों ने परदेशी को साष्टाङ्ग दंडवत किया। एक दो वर्ष का बच्चा जो दूकानदार के लड़की की पीठ पर शाल के अन्दर सो रहा था वह जाग पड़ा जागने पर वह रोया नहीं वरन् संकेत पाते ही उसने अपने माता पिता की भाँति दण्डवत किया।
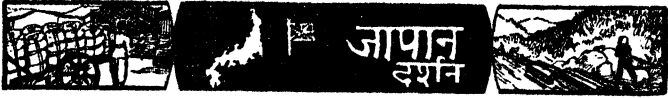
ऐनू लोगों का नमस्कार

लड़कियों को घर में फूल तथा आभूषण सजाने की शिक्षा दी जाती है। यह शिक्षा बड़ी आवश्यक है। जापानी घरों की प्रत्येक वस्तु बड़े ढङ्ग से सजा कर रक्खी जाती है। फूल के गमले तथा प्याले बड़े सुन्दर

ढङ्ग से सजाये जाते हैं जिससे सजावट को देखने वाले के हृदय पर बड़ा गहरा प्रभाव पड़ता है।

जापानी बालक गृहस्थी का मालिक होता है। वह घर की गृहणी तथा लड़की के ऊपर शासक होता है। उच्च श्रेणी के लोगों में पश्चिमी सभ्यता का कुछ प्रभाव आ गया है। धनी घरों की स्त्रियां पढ़ी लिखी होती हैं। और अपने पति के साथ मेज़ पर बैठ कर भोजन करती हैं। वह पश्चिमी वस्त्र भी धारण करती है परन्तु जब वह अपने घर में जापानी भेष में होती हैं तो प्राचीन जापानी स्त्रियों की भांति ही वह अपने पति तथा बड़े पुत्र का सम्मान करती हैं। साधारण घरों में स्त्री नौकर की भांति होती है।

पुरुष जाति का सम्मान जापानी कुटुम्ब में अधिक है। इसका मुख्य कारण वहां के रीत व रिवाज़ हैं। हमारे देश की भांति जापान में भी पित्रों की पूजा की जाती हैं। पित्र देवता माने जाते हैं पुरुष वर्ग ही जापानी जायदाद का मालिक माना जाता है इसी कारण बालक के पैदा होने में बड़ी खुशी होती है।

तीन तथा पांच वर्ष की अवस्था में बालक मन्दिर में

देवगणों का पूजन करने के लिये जाता है पांच वर्ष की अवस्था के बाद बालक हकमा (पायजामा) पहिनता है धनी घर के बालक पांच वर्ष की अवस्था के बाद पाठ-शाले में पढ़ने के लिये भेज दिये जाते हैं और उसके बाद विश्वविद्यालय में पढ़ने के लिये भेजे जाते हैं। ग़रीब बच्चे अपने रोजी रोज़गार में लग जाते हैं।

कोई कोई छोटे लड़के बड़े अद्भुत कारीगरी के काम कर दिखाते हैं। पुस्तकों की जिल्द बनाने, चित्रकला करने, कागज की लालटेन बनाने, घास की रस्सी तयार करने और चीनी के प्याले आदि बनाने का रोज़गार करते हैं। जो बच्चे दंत वैद्य बनने का काम करते हैं उनका अभ्यास देखने में बड़ा आनन्द आता है। बच्चे लकड़ी में लोहे की कील गाड़ कर उसे उखाड़ने का अभ्यास करते हैं। जापानी बड़ी कुशलता के साथ हाथ के अँगूठे और ऊँगली के सहारे दांत सरलता के साथ उखाड़ लेते हैं।

जापानी बच्चों को भारतीय बच्चों की भांति पाठ-शाला से बहुत छुट्टी मिलती है। जापान में बहुत से

त्योहार होते हैं। छुट्टी में बच्चे अपने माता पिता के साथ मन्दिर में जाते हैं।

जापानी बच्चों को अपने माता पिता के प्रति कर्तव्यों का पालन करना सिखाया जाता है। जापानी बच्चे अपने इन कर्तव्यों का सदा ध्यान रखते हैं।

बचपन से ही उन्हें आदर्श पुत्रों का पाठ पढ़ाया जाता है जिन्होंने अपने माता पिता तथा राजा के लिये बड़े बड़े कष्ट सहे हैं और उसका परिणाम उन्हें अच्छा मिला है।

जापानी बच्चे बड़े देश-भक्त होते हैं वह समझते हैं कि उनका जीवन उनके देश के लिये है इसी कारण वह खुशी तथा गर्व के साथ अपना जीवन अपने देश पर निछावर करने के लिये हर समय तयार रहते हैं।

जब रूस के साथ जापान का युद्ध हो रहा था तो जापानी लोगों ने अपनी देश-भक्ति का अच्छा परिचय दिया था। उन्होंने खुशी के साथ अपनी जाने भेंट की थीं।

जापानी बालिका

जापानी बालिका को बचपन से ही अपने सम्बन्धियों के आज्ञा-पालन का पाठ पढ़ाया जाता है। ओनराडाइ-काकू (स्त्री-आदर्श-शिक्षा) नामक पुस्तक प्रत्येक जापानी घर में पाई जाती है। उसे प्रत्येक जापानी बालिका को कण्ठाग्र करना पड़ता है। यह पुस्तक स्त्री जाति के लिये धार्मिक संहिता है। इस पुस्तक में स्त्री जाति के धर्म का वर्णन है। भारतीय स्त्रियों की भांति जापानी स्त्री को जीवन में तीन मुख्य आज्ञाओं का पालन करना पड़ता है। १—अविवाहित रहने पर उसे पिता की आज्ञा पालन करनी पड़ती है। २—विवाहित होने पर उसे पति तथा घर के बड़ों की आज्ञा पालन करनी पड़ती है। ३—विधवा हो जाने पर उसके पुत्र की आज्ञा माननी पड़ती है।

तीन वर्ष की अवस्था तक जापानी बालिका अपना सिर मुडवाये रहती है। तीन वर्ष के बाद बाल बढ़ने के लिये छोड़ दिये जाते हैं। सात वर्ष की अवस्था तक बालिका रेशमी संकरी ओबी तथा कमरबन्द की पट्टी का

प्रयोग करती है। सात वर्ष के पश्चात् वह अपनी माता की भांति वस्त्र धारण करने लग जाती है।

जापानी बालिकायें भांति भांति के सुन्दर रंगीले वस्त्र धारण करती है। जब उनका समूह कहीं निमन्त्रण या मन्दिर में जाता है तो ऐसा प्रतीत होता है मानों सुन्दर पुष्पों का खेत चला जा रहा है। हरा, नीला, पीला, भूरा, लाल बैंजनी, स्वेत सभी रंगों का वस्त्र उनके शरीर पर रहता है। वस्त्रों पर भांति भांति के रंग-बिरंगे फूलों की छपाई रहती है।

बचपन में ही जापानी बालिका सुन्दर वस्त्र धारण करती है और मेले तथा मन्दिरों में जाती है। ब्याह हो जाने पर फिर वह बाहर नहीं घूम सकती और न सुन्दर रंगीले वस्त्र ही धारण करती है। गृहस्थी के काम धंधों का भार उसके ऊपर रहता है। जब स्त्री के पुत्र का ब्याह हो जाता है तो उसे पुनः बाहर जाने की छुट्टी मिलती है। भारतवर्ष की भांति बहू के ऊपर गृहस्थी का कार्य चला जाता है और सास को घर के कामों से छुट्टी मिल जाती है। फिर सास मेले, मन्दिर तथा उत्सव में जाती है।

जापान में बालिका का व्याह सोलह या सत्रह वर्ष की आवस्था में हो जाता है। २० वर्ष की अवस्था तक अविवाहित रहना अभाग्य माना जाता है। भारतीय स्त्रियों की भांति व्याह के पश्चात् स्त्री अपने माता पिता के सम्बन्धियों को छोड़ पति के कुटुम्ब में शामिल हो जाती है। व्याह के समय उसे स्वेत (शोक का रंग) वस्त्र पहिनाया जाता है। जब लड़की पति के साथ चली जाती है तो पवित्र करने के लिये अग्नि उसी भांति जलाई जाती है जिस भांति मृतक क्रिया में जलती है। इसका अर्थ यह है कि स्त्री माता पिता के घर से मर चुकी और पति के घर चली गई जहां पति तथा उसके सम्बन्धियों की सेवा में उसे अपना समस्त जीवन बिताना पड़ेगा।

जापान में व्याह की रीति बड़ी साधारण होती है। हमारे देश की भांति वहां पर बारात नहीं जाती। भोज तथा व्याह संस्कार भी नहीं होता। व्याह संस्कार की प्रधान रीति यह है कि तीन प्यालों में साके (जापानी मदिरा) रखी जाती है। प्यालों में दो दो टोंटियां लगी रहती हैं। इन्हीं टोटियों से वर तथा स्त्री दोनों बारी

बारी से तीनों प्यालों को पीते हैं इसका अर्थ यह माना जाता है कि अब वर तथा स्त्री दोनों एक दूसरे के सुख-दुख के साथी रहेंगे।

जापानी स्त्रियों के विचित्र वस्त्र

विवाह के बाद नववधू को अपने सुन्दर कपड़े छोड़ देने पड़ते हैं। वह बादामी हलके बादामी और कम रंगीले वस्त्र पहिनती है। उसे घर में सब से पहले प्रातः

काल उठकर घर के द्वार तथा खिड़कियां खोलनी पड़ती हैं। यह कार्य नौकरों के लिये नहीं छोड़ा जाता है। बहू सास की पूरी सेविका रहती है। सास आनन्द के साथ सोती रहती है उसे प्रातःकाल उठ कर खिड़की तथा

जापानी स्त्रियों का गुलदस्ता

दरवाजों को खोलने के काम से फुर्सत मिल जाती है। बचपन की भांति सास का जीवन पुनः आनन्दमय हो जाता है।

पश्चिमी सभ्यता की लहर जापान में भी पहुँच चुकी है जो स्त्रियां पश्चिमी सभ्यता का अनुकरण कर रही है शायद उन्हें अभी संस्कृत के विरुद्ध आन्दोलन करना पड़े। अभी अधिकांश जापानी अपने रीत रिवाजों के बड़े पक्के मानने वाले हैं।

पहले यह रिवाज था कि जब स्त्री का ब्याह होता था तो वह अपने को बहुत कुरूप बना लेती थी इसका मतलब यह होता था कि वह किसी भी बाहरी पुरुष को अपनी ओर आकर्षित करना नहीं चाहती है। वह अपने दांतों को बिल्कुल काला कर लिया करती थी।

यदि जापानी स्त्री विधवा हो जाती है तो उसे दुख दिखाने के लिये अपने चेहरे तथा वस्त्र को उदास बनाना पड़ता है। वह सिर को मुँडवा डालती है और शोक के कपड़े पहिनती है। जापानी स्त्री वर्ग के सम्बन्ध में एक कहावत प्रसिद्ध है कि जापानी बालिका का रूप स्वर्ग की चिड़िया की भांति विवाहित स्त्री का रूप फाख्ता (पक्षी) की भांति और विधवा स्त्री का रूप कौवे की भांति होता है।
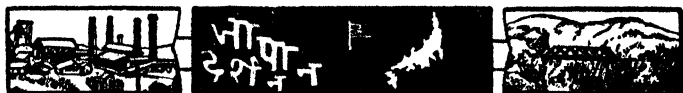
जापानी घर

जापानी घर बड़े साधारण होते हैं मकान की छत खपड़े या घास फूस की बनी रहती है। छत के सहारे के लिये स्थान स्थान पर खम्भे गाड़े जाते हैं। दिन में तेलदार कागज की दीवारें लगाई जाती है और रात में लकड़ी के मामूली पर्दे लगाये जाते हैं। साधारण तौर पर घर एक तल्ले बनाये जाते हैं।

एक मंजिला मकान बनाने के दो मुख्य कारण हैं। पहला कारण तो यह है कि जापान में भूकम्प बहुत आते हैं जिसके कारण बड़े पक्के मकान फट कर गिर जाते हैं और उनके पुनः बनाने में बहुत खर्च होता है। दूसरे यह कि वहां मामूली सस्ती लालटेन तथा खराब सस्ता पेट्रोल प्रयोग होता है। थोड़ी सी गलती करने पर दीवार में आग लग जाती है और अग्नि का प्रकोप सारे मुहल्ले या नगर में हो जाता है। सादे घर बनाने से लाभ यह है कि यदि भूकम्प अथवा अग्नि के कारण घर नष्ट होगया तो शीघ्र वह कम धन ही में फिर से बना लिया जाता है।

गरीब लोगों के घर में दिन में केवल एक बड़ा कमरा रहता है। रात के समय आवश्यकतानुसार कई कमरे सोने के लिये बना लिये जाते हैं। घर की फर्श ज़मीन के धरातल से एक फुट ऊँचा बनाया जाता है। कमरों को अलग करने वाली दीवारों के ढांचों पर कागज़ लगा रहता है। छतों के अन्दर नालियां बनी रहती हैं उन्हीं नालियों में होकर ढांचे इधर उधर खिसकाये जाते हैं घर के सामने का द्वार सड़क से मिला रहता है यदि कोई रास्ते से अपने घर को अलग करना चाहता है। तो वह कागज़ का पर्दा लगा देता है। दीवारों के ढाँचों को शोजी कहते हैं। रात में पर्दों को ढकने के लिये लकड़ी के पर्दे लगा दिये जाते हैं जिसे जापानी अमेज कहते हैं। पर्दे एक दूसरे के सहारे रुके रहते हैं और अंतिम लकड़ी का पर्दा लकड़ी की सिटकनी से कसा रहता है।

जापानी लोग शुद्ध हवा तथा सूर्य प्रकाश के बड़े शौकीन होते हैं। उनके घर के द्वार सदैव खुले रहते हैं। यदि धूप तेज होती है तो छाया के लिये पर्दा लगा दिया जाता है। जापानी घरों में सामान बहुत कम होता है।

फर्श के ऊपर चटाई बिछी रहती है जो कुर्सी तथा चारपाई का काम देती है स्टूल से मेज़ का काम लिया जाता है।

एक नवजवान जापानी स्त्री-पुरुष के घर में फर्श पर चटाई को लकड़ी की तकियां, कुछ सूती गद्दे एक खिसकने वाला पर्दा, एक लकड़ी की बनी हुई चावल की बाल्टी एक लकड़ी का नहाने का प्याला, एक लोहे की बटलोई एक भट्टी, एक दो चाय परसने की तश्तरी, कुछ चीनी के प्याले, कुछ तौलियां, एक तम्बाकू पीने का पाइप, आदि सामान रहता है गत महायुद्ध के पहले यह समस्त सामान लगभग ३१ रु० में मिल जाता था।

धनी घर अधिक मूल्य पर तयार होते हैं परन्तु उनके घर में मामूली ढङ्ग चालू हैं। उन घरों में भी वही घर के पुराने सामान देखने को मिलते हैं। घर में द्वार तथा मार्ग नहीं होते हैं। कमरे में चित्र, दृश्य तथा और दूसरी तस्वीरें लगी रहती हैं। जाड़े में गरमी पहुँचाने के लिये पिट्रौल भट्टी में जलाया जाता है। जापानी लोग कुर्सी का प्रयोग बिलकुल नहीं करते हैं।

जब सोने का समय आ जाता है तो दिन को बैठने का कमरा रात में सोने के लिये बना लिया जाता है।

फर्श पर चटाई के ऊपर गद्दा बिछा दिया जाता है। लकड़ी की तकियायें बिस्तर पर रख दी जाती हैं। लकड़ी की तकियों के लगाने में बड़ा कष्ट होता है।

जापानी घरों में जूते पहिन कर जाना मना है क्योंकि ऐसा करने से चटाइयां खराब हो जाती हैं। जुते द्वार पर उतार दिये जाते हैं और केवल टाबी (मोज़ों की भांति पैर में पहिनने का वस्त्र) पहिने घरों में लोग प्रवेश करते हैं।

धनी जापानी लोगों के घर में यदि अधिक सामान रहता है तो वह अपने सामान तथा आभूषण आदि रखने के लिये सिमेंट का गोदाम बनवा लेते हैं और उसी में अपना सारा सामान रखते हैं। जब किसी वस्तु की आवश्यकता होती है तो वह सामान निकाल लिया जाता है और काम समाप्त हो जाने फिर उसी स्थान पर रख दिया जाता है। गोदाम के अन्दर आभूषण और धन भी रक्खा जाता है।

धनी जापानी लोग अपने समस्त सजावट की वस्तुओं से अपना घर एकाएक नहीं सजाते हैं। वह दिन प्रति दिन अपनी सजावट बदलते रहते हैं। रोज़ाना

उनकी सजावट में कोई न कोई नवीनता प्रतीत होती है। पर्दे, गमले, दृश्य आदि के सजाने में वह बड़े चतुर होती हैं।

जापान में पुष्प पात्र गुलदान बड़े सुन्दर होते हैं। उन्हें बड़ी सुन्दरता से सजाया भी जाता है। गुलदान को जापान में काकेमोनो कहते हैं।

प्रत्येक भले जापानी घर में जापान के सम्राट के लिये एक कमरा रहता है। उस स्थान को जापान में टोकोमोना कहते हैं। टोकोमोना में एक पुष्प पात्र रहता है जिसमें प्रत्येक समय नये पुष्प के गुच्छे रक्खे जाते हैं। जापानी लोग इतने राजभक्त होते हैं कि प्रत्येक घर में उसके ठहरने के लिये स्थान बना रहता है टोकोमोना की छत में भाँति भाँति के बहुत से गुलदान टँगे रहते हैं। जापानी सम्राट को मिकाडो कहते हैं। टोकोमोना के सामने एक पुष्प पात्र रक्खा जाता है जिसमें प्राचीन ढङ्ग से पुष्प सजाये जाते हैं जिसका रूपकमय अर्थ समझा जाता है।

रात के समय कागज़ की लालटेन प्रत्येक जापानी घर में जलाई जाती है। इस लालटेन का प्रकाश धुँधला

रहता है। अब योरुपीय लालटेनों का प्रयोग होने लगा है परन्तु काग़ज़ की लालटेने सस्ती मिलती हैं और उनसे अग्नि दुर्घटना भी हो जाती है।

जापान के कुली लोग साधारण रूप से बड़े नगरों के पिछले मार्ग में रहते हैं। उनके घर बड़े छोटे होते है। उनके घर को हम 'चलते हुये घर, कहते हैं। यह घर इतने छोटे होते हैं कि जब कोई कुली अपना एक स्थान को छोड़ कर दूसरे स्थान को जाता है तो वह अपने घर को अपने साथ लेता जाता है। वह घर ले जाता है और उसकी स्त्री घर का सामान ले जाती है वह शीघ्र ही किसी दूसरे स्थान पर अपना घर बना कर सजा देते हैं। इस प्रकार कुछ ही घंटों में उनका नया घर तयार हो जाता है।

दिनचर्या

जापानी घर में प्रातः काल सब से पहले घर की गृहणी उठती है। वह फर्श पर पड़े गद्दे से उठ कर पहले जलती हुई लालटेन बुझाती है। जापानी घर में काग़ज़ की लालटेन का एनडान कहते हैं। उसके बाद मलकिन अमाडो (लकड़ी के पर्दे) को खोल कर नौकर को बुलाती है।

जापानी लोग सवेरे चावल और चाय का प्रयोग करते हैं। भोजन तयार होने पर चावल, चिमटी और चाय आदि सावधानी के साथ यथा उचित स्थान पर भोजन करने के लिये सजाये जाते हैं। जापानी लोग भोजन परोसने में शिष्टाचार का बड़ा व्यवहार करते हैं। चाहे भोजन कितना ही खराब हो परन्तु परोसने में किसी प्रकार की त्रुटि न होनी चाहिये। मेहमानों के सामने दो बार या तीन बार भोजन परोसना नियम के विरुद्ध माना जाता है। यदि भोजन परोसने में त्रुटि हुई तो फिर परोसने वाले की खैरियत नहीं रहती।

भोजन करने के बाद घर का मालिक अपने काम पर जाने के लिये तयार होता है। यदि पानी बरसता

रहता है। तेज़दार कागज़ का छाता और खड़ाऊँ नहीं तो घास का बना हुआ चप्पल स्त्री पति को देती है। स्त्री तथा घर का नौकर उसे द्वार तक भेजने जाते हैं और प्रणाम करके उसे शुभ कामना के साथ विदा करते हैं।

जापान में घर के नौकरों का बड़ा आदर होता है। वह घर के बच्चों की भांति ही माने जाते हैं। जापान में घरेलू नौकरी बड़ी आदरणीय होती है। यदि किसी घरेलू नौकर ने किसी व्यापारी की लड़की के साथ ब्याह कर लिया तो सामाजिक दृष्टि से वह एक श्रेणी नीचे गिर जाता है। पहले जापानी व्यापारियों की गणना कुली तथा मज़दूर वर्ग में होती थी।

घरेलू नौकरों का आदर दो कारणों से अधिक है पहला तो यह कि प्राचीन रीत रिवाज के कारण घर की स्त्री को अपने पति, बच्चों, सास और ससुर की सेवा स्वयम् करनी आवश्यक होता है इसलिये घरेलू सेवा का आदर अधिक है। दूसरे यह कि अधिकांश घरेलू नौकर प्राचीन उच्च श्रेणी के हैं।

घरेलू सेवा के लिये लड़के तथा लड़कियां रक्खी जाती हैं। उन्हें घरेलू सेवा के लिये शिक्षा प्राप्त करनी

पड़ती है। इस शिक्षा के कारण वह नौकर तथा मालिक के बीच के सम्बन्ध को सीख लेते हैं। जापानी सेवक (या सेविका) अपनी मलकिन का अभिवादन झुक कर तथा घुटनों पर बैठ कर करता है और जो शब्द छोटे बड़ों के लिये प्रयोग करते हैं उन्हीं शब्दों से वह मलकिन को बुलाता है परन्तु जब घर में कोई बाहरी मिलने आता है तब नौकर मालिक के साथ ही साथ मेहमान से बातचीत कर सकता है और हँस भी सकता है। इतना होने पर भी जापानी सेवक अपना धर्म नहीं भूलता और उसमें अशिष्टता नहीं आती है।

घर के मालिक तथा मलकिन के न रहने पर सेवक मेहमानों का यथोचित सत्कार बराबरी के साथ कर सकता है। वह उन्हें झुक कर प्रणाम करने के बाद कमरे में ले जाकर बैठाता है और फिर उन्हें चाय के पांच प्याले पीने को देता है और फिर आनन्द पूर्वक बात चीत करता है। मालिक के आ जाने पर भी वह कमरे के भीतर रह सकता है और बात चीत तथा हँसी में भाग ले सकता है।

पति को विदा करने के पश्चात् जापानी महिला

कागज़ के सभी परदे हटा कर समस्त घर को एक बड़ा कमरा बना लेती है। इस प्रकार घर में खूब हवा लगती है। वह बिस्तर लपेट कर एक ओर रख देती है और लकड़ी के सामानों को रगड़ कर पालिस लगा कर साफ कर देती है। भोजन बनाने की झंझट जापान में अधिक नहीं रहती है। चावल का व्योहार प्रायः प्रत्येक समय भोजन में होता है। तरकारी और चाय की भी आवश्यकता भोजन में पड़ती है। अमीर गरीब सभी चावल का व्योहार करते हैं। भोजन में मछली आदि का प्रयोग होता है। चावल अच्छे सुन्दर साफ बर्तनों में परोसा जाता है। चाय का बर्तन आग पर भोजन के समय चढ़ा रहता है और पानी उबलता रहता है।

जब जापानी स्त्री बाज़ार सौदा खरीदने जाती है। तो चावल लेने के बाद वह मछली व तरकारी वालों की ओर घूमती है। मछली बाज़ार में समुद्र से जितने जीव जन्तु पकड़ कर लेते हैं वह सभी का निरीक्षण करती है वह मछली के साथ ही साथ सेवार घास भी खरीदती है जिसका प्रयोग भोजन के साधारण तौर पर किया जाता है। सेवार घास कच्ची, उबाली और शोरबेदार

खाई जाती है। जापानी लोग केकड़ा, सीफ आदि भी खाते हैं।

तरकारी की दूकान पर सेम, मटर की फली, आलू मक्का, टमाटर, शलजम, खबैरा, सरदा, तरबूज, ककड़ी खीरा, प्याज, लहसुन, मिर्चा, गोभी, भांटा आदि भांति की तरकारियां बिकती हैं। जंगली अदरक और बांस की कोंपल को जापानी बड़े चाव से खाते हैं। इन तरकारियों का अचार भी बनाया जाता है।

जब जापानी स्त्री घर लौटती है तो वह देखती है कि घर के नौकर ने घर के मामूली कार्यों को समाप्त कर लिया है। जापानी घरों में नौकरों को काम करने के लिये कम रहता है। वह या तो नये किमनोस सीते रहते हैं या शतरञ्ज खेलते रहते हैं। सस्ते होने के कारण वहां नौकरों की संख्या अधिक है। छोटी लड़कियां भोजन कपड़े पर काम करती है। बड़े नौकरों को ५ या ६ रु० प्रति मास वेतन देना पड़ता है।

जब कोई नौकर नौकरी छोड़ना चाहता है तो वह सीधे तौर पर नौकरी से जवाब नहीं देता वरन् बहाने से छुट्टी लेकर चला जाता है और फिर सेवा में उपस्थित

न हो सकने का प्रार्थना पत्र भेज देता है जिससे मालूम हो जाता है कि उसने नौकरी छोड़ दी है।

इसी भांति जब किसी नौकर को निकालना होता है तो मालिक किसी तीसरे व्यक्ति द्वारा नम्रता के साथ नौकर से कहला देता है कि वह नौकर रखने में असमर्थ है।

संध्या समय समस्त कुटुम्ब और नौकर घर के प्रधान कमरे में एकत्रित होते हैं। घर की मलकिन और मालिक भट्टी के समीप बैठते हैं इनके पास ही ऐनडान (कागज़ की लालटेन) रहती है घर की कुमारी लड़कियाँ कुछ दूर पर सीने पराने का काम लेकर बैठ जाती हैं। उस समय वह आपस में बातचीत करते हैं या पिता उन्हें किसी पुस्तक से कोई कहानी पढ़कर सुनाता है।

जब सोने का समय होता है तो बिस्तर (गद्दे) निकाले जाते हैं। बिस्तर लगाते समय यह ध्यान रक्खा जाता है कि किसी का सिरहाना उत्तर की ओर न हो। दक्षिण की ओर पैर करके सोना हमारे भारतवर्ष की भांति वहां भी अशुभ माना जाता है। दक्षिण की ओर पैताना करके केवल मुर्दे को लेटाया जाता है। उसके बाद वह लकड़ी के तकिये लगा कर सो जाते हैं।

जापानी खेल कूद

जापान में भांति भांति के खेल तमाशे खेले जाते हैं। कुछ खेलों में बच्चों के साथ माता पिता और आजा आजी भी भाग लेते हैं। बालिकाएँ बल्ला (बैटिलडोर), खेल की परदार गेंद (शटल काक) और छलाँग मारने वाली गेंद (बाउन्स बाल) का खेल खेलती हैं। बालक लट्टू नचाते तथा लड़ाते हैं। पतंग उड़ाने का खेल तो बालक तथा वृद्ध सभी खेलते हैं।

लड़के टिड्डों को पकड़ बांस के पिंजड़ों में रखते हैं और फिर उन्हें लड़ाकर मज़ा उड़ाते हैं। जुगनू को पकड़ने का खेल जापान में प्राचीन काल से ही चला आता है बच्चे उनके पीछे दौड़ते हैं और जब वह उनके समीप पहुँच जाते हैं तो उनको पंखे से मार कर उन्हें गिरा देते हैं।

जहां कहीं पानी के झरने हैं वहां जापानी बच्चे अपने हाथों से छोटी पनचक्कियाँ लगाकर खेल खेलते हैं। यह पनचक्कियाँ बालकों की बनाई छोटी मिलों तथा कलों को चलाती हैं।
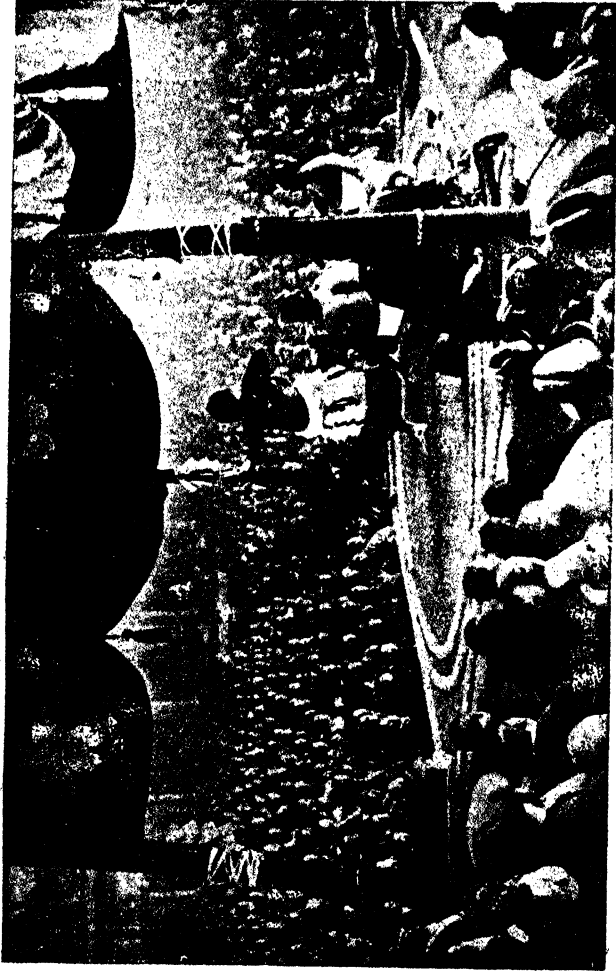
जापानी दंगल। पहलवान बीच में खड़े हैं।

बहुत से बालक गुबरैलों की गाड़ी का खेल खेलते हैं। वह आठ या दस गुबरैलों को एकत्रित कर लेते हैं। वह कागज़ की एक छोटी गाड़ी बनाते हैं और उसमें चावल भर देते हैं। छोटी गाड़ी को वह गुबरैलों की पीठ के साथ रेशम के तागे से बांध देते हैं या गोंद द्वारा चिपका देते हैं। उसके बाद गाड़ी हाँकी जाती है जो देखने में बड़ी अच्छी लगती है। यह खेल बराबर तख्ते पर खेला जाता है। जापानी बच्चे अपने खेल में लड़ाई झगड़ा नहीं करते यदि किसी प्रकार का झगड़ा छिड़ा तो उनमें जो सबसे बड़ा होता है वह झिड़क देता है और सभी उसका कहना मान लेते हैं। जापानी बालक बड़ों की आज्ञा का पालन करना अपना धर्म समझते हैं।

जापानी बालक सड़क के किनारे बालू के चित्र बनाने का खेल खेला करते हैं। वह अपने पास लाल, काला, पीला, नीला और सफेद बालू का बोरा रखते हैं। वह पहले अपने सफेद बालू को वर्गाकार रूप में फैला देते हैं फिर उसी पर काली बालू से मनुष्य, चिड़िया या पशु का आकार बनाते हैं। उसके बाद

दूसरे रंग का बालू का प्रयोग कर के चित्र समाप्त करते हैं। बालू के चित्रों के बनाने में जो निपुण होता है यदि उसका खेल देखा जावे तो बड़ा अद्भुत होता है। वह पहले नीला बालू में हाथ डालता है और फिर पीले में और दोनों की बालू अलग अलग धार में गिराता है। देखते ही देखते ज़रा सा हाथ फैला कर वह एक मोटी हरी चमकीली धार बना देता है और फिर एक ही पल में नीली और पीली धारों को अलग कर देता है।

घर के अन्दर भांति भांति के खेल खेले जाते हैं। वर्णमाला के ताश का खेल बहुत खेला जाता है। इस खेल में कुछ ताश होते हैं। उन ताशों में जापानी कहावतों का समझने के लिये चित्र हैं। लड़के एक गोले में बैठ जाते हैं और ताश उन्हें बांट दिये जाते हैं। एक बालक कहावत कहता है। उस कहावत से संबन्ध रखता हुआ ताश शीघ्र ही वापस कर दिया जाता है। इसी प्रकार दूसरे ताश भी वापस हो जाते हैं परन्तु सब से पहले जिसका ताश वापस होता है वह हारता है।

जापान में दस साल से कम अवस्था वाली बालि-

जापानी लड़कियों की ड्रिल
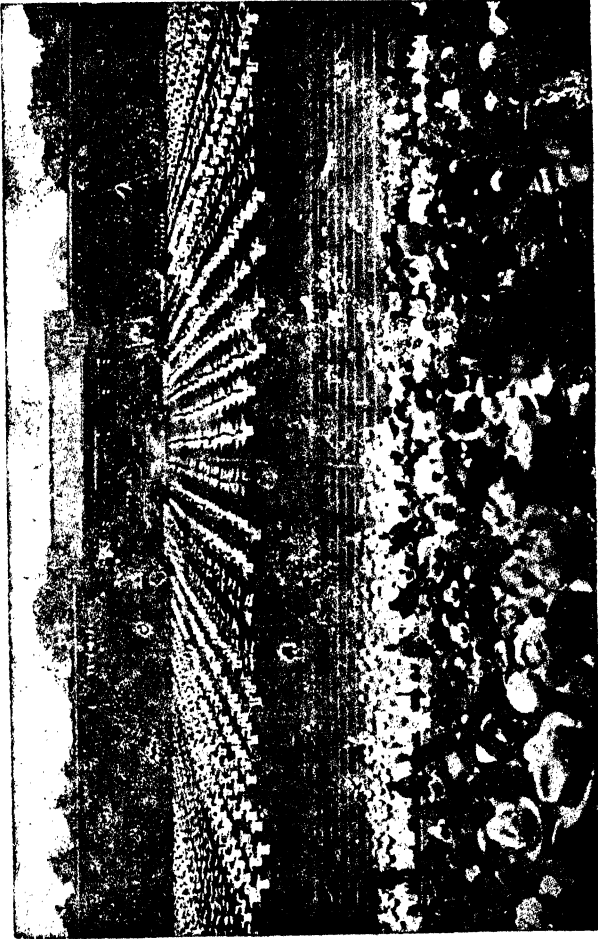
काओं का एक खेल होता है। इस खेल में सैकड़ों बालिकाएँ भाग लेती हैं। वह सुन्दर रँगीले वस्त्र धारण किये रहती हैं। बालिकाओं की दो सेनाएँ बनाई जाती हैं। जो एक दूसरे से कुछ गज़ की दूरी पर खड़ी कर दी जाती है। उनके बीच में दो नौकर दो लम्बे बांस अलग अलग लेकर खड़े हो जाते हैं। इन बांसों में एक चपटे छिछले ढोल लटकते रहते हैं। यह ढोल चित्र विचित्र रंगीले कागज़ से ढके रहते हैं।

उसी बीच दो युवक अध्यापक आगे आते हैं। प्रत्येक अध्यापक रंगीन छोटे गेंदों की एक टोकरी लिये रहता है। यह गेंदे बालिकाओं और ढोल के मध्य डाल दिये जाते हैं। उसके बाद बालिकाओं को संकेत किया जाता है और वह गेंद की ओर दौड़ती है। लड़कियां गेंदो को लेकर कागज़ के ढोल की ओर फेंकती हैं। गेंदों की चोट से जब ढोल फट जाता है तो उसमें से रंगीन कागज़ की छोटी लालटेनें, छाते झंडे और भांति भाँति के खिलौने बच्चों के मध्य आ गिरते हैं। यह खेल बड़ा ही भला मालूम होता है।

गुड़िया और झंडे का त्योहार

साल के तीसरे महीने के तीसरे दिन ओहीना मतसूरी (गुड़ियों का त्योहार) का उत्सव होता है। इस दिन गोदाम से गुड़ियां तथा उनके सामान निकाले जाते हैं और आल्मारियों तथा ताकों में लाल कपड़े पर सजाये जाते हैं। यह गुड़ियां बड़ी आदर की दृष्टि से देखी जाती हैं। क्योंकि बहुत से घरों में हज़ारों वर्ष की गुड़ियां तथा उनका सामान मौजूद है। प्राचीन गुडियां तथा उनके सामान समय की सभ्यता बतलाते हैं। उनका एक बड़ा एतिहासिक महत्व होता है। उन्हीं गुड़ियों के द्वारा छोटे बच्चों को बतलाया जाता है कि उनके पूर्वज किस तरह के थे और कैसे रहा करते थे।

छोटी लड़कियों को रोज़ाना खेलने के लिये अलग साधारण गुडियाँ होती हैं। त्योहार में काम आने वाली गुड़ियों का मूल्य अधिक होता है। गुड़ियों का घर बना बनाया बाज़ार में मिलता है जिसमें घर के सभी आवश्यक सामान रहते हैं। जापानी लड़कियाँ गुड़ियों के छोटे बर्तनों में ही गुड़ियों के त्योहार के समय भोजन तयार करती हैं।

लड़की के उत्पन्न होते ही गुड़ियों के इकट्ठे करने का कार्य आरम्भ हो जाता है। प्रत्येक बच्चे को गुड़ियों का जोड़ा भेंट किया जाता है। धीरे धीरे वह गुड़ियों का सभी सामान इकट्ठा कर लेती है। यह गुड़ियां उस लड़की की जायदाद है और वह ब्याह होने पर उन्हें अपने साथ ले जाती है।

जब गुड़ियों के त्योहार का समय समीप आ जाता है तो जापानी दुकानों में गुड़ियों का सामान बिकने लगता है। साधारण गुड़ियां मिट्टी की बनाई जाती हैं। अच्छी गुड़ियां लकड़ी की बनती हैं और सुन्दर वस्त्र उन्हें धारण कराये जाते हैं। गुड़ियों के साथ ही साथ छोटे प्याले, तश्तरियां, चूल्हे आदि घरेलू सामान भी बिकते हैं। एक सस्ते पूरे सेट का दाम केवल कुछ आना होता है परन्तु यदि अच्छे से अच्छा लेना चाहे तो फिर हज़ारों रुपये खर्च करने पड़ते हैं। गुड़ियों के सामान चांदी, सोने और दूसरी धातुओं के भी बनाये जाते हैं। राज्य दर्बार, कचेहरी, समाज आदि सभी की गुड़ियाँ बाज़ार में मिल सकती हैं। प्राचीन ऐतिहासिक सज्जनों की गुड़ियां प्राचीन ढङ्ग के भेष में मिलती हैं।

त्योहार की समाप्ति लड़कियाँ एक सुन्दर भोज तथा झांकी के साथ करती हैं।

झंडे का त्योहार लड़कों का है। यह साल के पांचवें महीने के पांचवें दिन पड़ता है। इस अवसर पर प्रत्येक घर (जिस घर में बालक होता है) के सामने बांस का लट्ठा गाड़ दिया जाता है। लट्ठे के ऊपरी भाग से एक मछली लटकती रहती है। यदि किसी घर में साल के भीतर ही पुत्र उत्पन्न हुआ रहता है तो घर के सामने वाले बांस की मछली और अधिक बड़ी रहती है। मछली का बदन खोखला रहता है इसलिये जब हवा चलती है तो मछली के पर तथा पूंछ असली मछली की भांति चलने लगती है। जापानी लोग इस में मछली का प्रयोग इसलिये करते हैं कि मछली में यह शक्ति होती है कि वह नदी में चढ़ाव की ओर बढ़ जाती है और प्रपातों और झरनों में भी चढ़ जाती है। मनुष्य को भी जीवन की नदी पार करना रहता है जिसमें उसे जीवन के कष्टों को पार करना पड़ता है।

जैसे जैसे यह त्योहार समीप आता है दूकानें खिलौनों से भर जाती हैं। लड़कों और लड़कियों के लिये अलग

अलग खिलौने रहते हैं। लड़के, सैनिक, सूरमा, सेनापति अथवा किसी प्राचीन लड़ाका सिपाही आदि के खिलौने खरीदते हैं। उस दिन लड़कों को झंडे, लड़ाई के टोप, तलवारें, धनुष बाण और भाले आदि सामान प्राचीन जापानी योद्धा दिया करते थे। झंडे का त्योहार दाचिमा (जापानी युद्ध देवता) के पवित्र दिन के अवसर पर मनाया जाता है। उस दिन का मुख्य खेल लड़ाई का स्वांग भरना है।

लड़के दो दल बनाते हैं और हीके तथा जेञ्जी दलों का क्रमशः नाम रख देते हैं यह नाम प्राचीन दो जातियों हैं। हीके के पीठ पर लाल झंडा और जेञ्जे के पास सफेद झंडा रहता है। सभी लड़के मिट्टी का टोप लगा लेते हैं। लड़ाई आरम्भ होती है और छोटे सैनिक बांस की तलवार से एक दूसरे पर वार करते हैं। ज़ोर से लगने पर मिट्टी का टोप टूट जाता है और उसे पीछे हटना पड़ता है। जो दल अधिक टोप तोड़ता, अधिक झंडे छीनता और अधिक खम्भे तोड़ता है वही जीता माना जाता है।

इस त्योहार के दिन अस्त्रों का प्रयोग होता है और

युद्ध बाजे बजते हैं। चारों ओर झंडे ही झंडे दिखाई पड़ते हैं। लड़के अपने सिरों पर झन्डे लगाते हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि जापानियों के विश्वास के अनुसार ओनी नामक दुष्ट देवता बच्चों को खाने आता है। वह झन्डों की तलवार से भय खाता है। इसी कारण इतने अधिक झन्डे लगाये जाते हैं।

जापान में चीजें बड़ी सस्ती मिलती हैं। वहां मजदूरी बहुत कम है इसी कारण खर्च भी कम है। जो व्यक्ति एक शिलिंग (बारह आने के लगभग) रोजाना कमाता है वह अच्छा वेतन पाने वाला माना जाता है।

जापान में सबसे छोटा सिक्का रिन है यह एक पैसे का लगभग चौथाई होता है एक फार्दिंक लगभग एक पैसे के बराबर होता है। पांच रिन का मूल्य एक फार्दिंक के बराबर होता है।

जापानी लोग नाटक देखने के बड़े शौकीन होते हैं। नाटकों में प्राचीन वीरों का चित्रपट दिखाया जाता है। नाटक छोटे तथा बड़े सभी प्रकार के होते हैं। छोटे नाटकों में बहुत कम व्यय करना पड़ता है। नाटक देखते समय जब लोग खुश होते हैं तो अपने

तो अपने टोप उतार कर नाटक के चबूतरे पर फेंक देते हैं जिसे नौकर इकट्ठा करके रख देते हैं और इनाम पाने पर ही वापस देता है। लोगों को नाटकालय के बाहर ही जूते रखने पड़ते हैं। जूते रखने के लिये टिकट वापस करने पर जूते वापस मिलते हैं।

मिठाई तथा शर्बत का बोतल बच्चों को एक रिन (छदाम) खर्च करने पर ही मिल जाता है। इस प्रकार एक पैसे में ही जापानी बच्चे अपने मेले का पूरा आनन्द उठाते हैं।

पतंग उड़ाना

जापान में पतङ्ग उड़ाने का त्योहार भी मनाया जाता है। बूढ़े, जवान, बच्चे सभी पतङ्ग उड़ाने में हाथ बँटाते हैं। हमारे यहाँ भी पतंग उड़ाने का खेल बहुत होता है। हमारे देश में बहुत बड़ी पतंगें नहीं बनाई जाती हैं परन्तु जापान में ५ फुट वर्गाकार पतंगें होती हैं।

लड़के अलग अलग तो पतङ्ग लड़ाते ही हैं वरन् जापान में बीस बीस या पचीस पचीस की टोली में लड़के पतँग लड़ाते हैं।

पतँग लड़ाने के त्योहार के दिन योरूमित्सू (जापानी बालक) अपनी बड़ी पतङ्ग सजा कर लड़ाने के लिये तयार हुआ। यारू के छोटे भाई का नाम होता है। योरू की पतंग ५ फुट वर्गाकार थी। वह मज़बूत कागज की बनी थी। योरू ने शीशे की बुकनी को गोंद में मिला कर अपने पतंग के मंझे (पतंग की मज़बूत डोरी) को बनाया था। मंझा पतँग के समीप ही कुछ गज लम्बा बांधा जाता है जिससे पतंग जल्द न कटे वरन् अपने विपरीत पतंग को शीघ्र ही काट दे।

देश दर्शन

पतंग लड़ाने के मैदान में बहुत से लोग पतंग लड़ा रहे थे। तमाशा देखने वाले तमाशा देख रहे थे। यो रू मित्सू भी मैदान में पहुँचा और पतंग को आकाश की ओर उड़ाया इतने में उसे एक दूसरी पतंग चील की सूरत की दिखाई पड़ी। वह चील उसकी पतंग की ओर बढ़ रही थी। योरू मित्सू ने अपनी डोर संभाली और लड़ाई के लिये तयार हो गया।

लड़ाई आरम्भ हुई दांव पर दांव लगने तथा कटने लगे। लड़कों को तमाशे में बड़ा आनन्द आ रहा था। योरू के विरोधी बालक ने अपनी पतंग और अधिक ऊँचा किया और एक एक उसकी पतंग योरू पर टूट पड़ी परन्तु योरू भी बड़ा चतुर था उसने अपनी पतंग बचा लिया तालियां बजने लगीं परन्तु इसी बीच विरोधी बालक को अनुकूल हवा का झोंका मिल गया उसकी पतंग योरू की पतंग पर फिर टूट पड़ी कुछ समय तक दांव-पेंच चलाते रहे आखिर योरू की डोरी ढीली पड़ गई। उसकी पतंग कट गई और वह हार गया। विजयी बालक ने योरू की पतंग पकड़ लिया और वह उसकी हो गई।

इतो खड़ा हुआ यह तमाशा देखता रहा उसने योरू की एक दो फुट वर्गाकार पतंग निकाली। यह पुरानी थी परन्तु अच्छी तरह उड़ सकती थी। इतो ने अपनी पतंग उड़ाई। इसी बीच विरोधी बालक ने अपनी चील (पतंग) उतार ली थी और योरू की बड़ी पतंग उड़ाई थी। कुछ ही समय में दोनो पतङ्गें फिर आमने सामने आई और लड़ाई ते हुई। वार होने लगा, दांव पर दांव लगने लगे और पेंच पर पेंच कटने लगे। चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था। विरोधी बालक की पतङ्ग भारी थी इसलिये उसका आक्रमण अचूक होता था परन्तु इतो भी बड़ा कुशल उड़ाका था वह दांव-पेंच से अपनी पतङ्ग बचा लेता था। एक एक इतो का अनुकूल हवा का झोंका मिला उसी में उसने अपनी पतङ्ग की छलांग लगवाई। बात की बात में इतो की पतंग विरोधी बालक के पतङ्ग पर गिद्ध की भांति टूट पड़ी। दांव सच्चा था, पेंच खाली नहीं गया और बड़ी पतङ्ग की डोर कट गई। चारों ओर वाह! वाह! का शब्द गूँजने लगा। इतो जीत गया और उसके हाथ बड़ी पतङ्ग लगी। उसने वह पतङ्ग लेकर अपने बड़े भाई योरूमित्सू के

अर्पण किया। सभी दर्शक इती की प्रशंसा करने लगे और उसे इनाम दिया।

पतगें कई तरह की होती है। मछली चील, बाज और दूसरी चिड़ियों की आकार की भी होती हैं। पतंग रंग विरंगे कागजों की बनाई जाती हैं। उनके ऊपर राजा, महाराजा सूरमा देवता और राक्षस के चित्र बने रहते हैं।
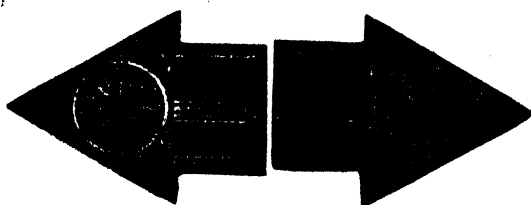
परियों की कहानी

प्रायः सभी देशों में परियों की कहानियां प्रचलित हैं। उसी भांति जापान में भी बहुत सी कहानियाँ प्रचलित हैं जिनमें मोमोतारो की कहानी सब से अधिक प्रसिद्ध है। कहानी इस प्रकार है :—

किसी समय में एक नदी के किनारे पहाड़ के नीचे एक बृद्धा स्त्री तथा एक बृद्ध पुरुष रहा करते थे। प्रति दिन बूढ़ा पर्वत पर लकड़ी काटने और स्त्री नदी पर कपड़े धोने जाती थी। बेचारी स्त्री बड़ी दुखी थी क्योंकि उसके कोई बच्चा न था। वह सोचा करती थी कि यदि उसके एक बच्चा हो जावे तो वह संसार में सब से अधिक सुखी हो जावे।

एक दिन जब कि वह अपने कपड़े धो रही थी उसने कोई वस्तु नदी के ऊपर तैरती हुई आते देखा। वह एक बड़ी नाशपाती थी उसे उसने पकड़ लिया और घर की ओर लेकर चली। जब वह उसे लेकर चली तो उसने एक बच्चे के रोने की आवाज़ सुनी। स्त्री ने दाहिने, बाएँ, चारों ओर देखा परन्तु लड़के का कहीं पता न

था। उसने आवाज़ दोबारा सुनी तब उसने विचार किया कि शायद वह आवाज़ नाशपाती से आ रही थी।

स्त्री ने नाशपाती को शीघ्र ही फाड़ डाला और अचम्भे के साथ देखा कि उसके बीच में एक सुन्दर बालक बैठा है। स्त्री ने उस बच्चे का पालन पोषण किया और उसका नाम मोमोतारो रखा।

जब मोमोतारो बढ़ कर १७ वर्ष का हुआ तो उसने अपने भाग्य देखने के विचार किये। वह एक द्वीप पर आक्रमण करने की बात सोच रहा था। उस द्वीप में एक भयानक राक्षस रहा करता था। बृद्धा स्त्री ने भोजन आदि देकर अपने पुत्र को द्वीप की यात्रा के लिये विदा किया।

थोड़ी दूर जाने पर उसे एक बर्रें मिली। बर्रें ने कहा "ओ! मोमो तारो अपने भोजन में से थोड़ा मुझे भी खाने को दो, मैं राक्षस से युद्ध करने में तुम्हारी सहायता करूँगी।"

मोमोतोरा ने खुशी के साथ उसे भोजन दिया और आगे बढ़ा। थोड़ी दूर चलने पर उसे एक केकड़ा मिला उसके साथ भी यही सुलहनामा हुआ। उसके

बाद उसे शाह बलूत का फल तथा चक्की का पत्थर मिला।

इस प्रकार पांचों मित्र राक्षस के द्वीप को चले। जब वह द्वीप में पहुंचे तो राक्षस के घर की ओर बढ़े और देखा कि राक्षस घर पर नहीं है। यह देख कर शाह बलूत का फल भट्टी में घुस गया जिसमें आग जल रही थी। केकड़ा नहाने के हौज में बैठ गया, बर्रे कोने में जा छिपी, चक्की का पत्थर छत पर जा लटका और मामोतारो घर के बाहर चला गया।

राक्षस कुछ देर में घर लौट कर आया। वह भट्टी के समीप हाथ सेंकने गया। जैसे ही उस ने भट्टी के ऊपर हाथ रक्खा वैसे ही शाहबलूत का फल चटका और राक्षस के हाथ जल गये। राक्षस अपना हाथ ठंडा करने के लिये नहाने वाले हौज की ओर बढ़ा। वहां का केकड़ा दाँव लगाये बैठा था। उसने राक्षस की उंगली पकड़ ली। किसी प्रकार उंगली छुड़ा कर राक्षस कोने की ओर भागा परन्तु वहां पर बर्रे ने काट खाया। चिल्लाता हुआ राक्षस घर के बाहर भागा परन्तु चक्की का पत्थर छत से गिरा और राक्षस वहीं मर गया।

इस प्रकार मोमोतारो को बिना किसी कष्ट के ही राक्षस का धन प्राप्त हो गया।

जीज़ो साधु की कहानी भी जापान में बहुत प्रसिद्ध है। जीज़ो यात्रियों तथा बच्चों का साधु है। यह महात्मा दीन दुखियों की दुख में सहायता करते हैं।

जापान में सब कहीं सड़क के किनारे जीज़ो की मूर्ति देखने में आती है। मूर्ति के दाहिने हाथ में लाठी और बांए हाथ में एक गोला रहता है। मूर्ति कमल के फूल पर बनाई जाती है। उसके पैर के समीप पत्थर के टुकड़े तथा कँकड़ के ढेर लगे रहते हैं। प्रत्येक यात्री कंकड़ उठा कर साधु के पैर पर चढ़ाता है। जापानी माताओं का आदेश रहता है कि प्रत्येक बालक मूर्ति पर कंकड़ चढ़ाया करे। जापानी लोगों का विश्वास है कि मरने के बाद बैतरनी नदी पार करनी होती है जिसके पार करने में जीज़ो साधु सहायक होते हैं।

यूराशिया की कहानी भी जापानी बहुत पसन्द करते हैं। यूराशिया एक मल्लाह का बालक था। वह बड़ा सुन्दर था और जापान सागर के तट पर रहता था। वह रोजाना अपनी नाव मछली पकड़ने को ले जाता

था। एक दिन यूराशिया घर नहीं लौटा जब वह कई दिनों तक नहीं लौटा तो लोगों ने समझा वह मर गया है।

समुद्र में उसकी भेंट समुद्र देवता के पुत्री से हुई। देव की पुत्री उसे सदाबहार स्थान पर ले गई वहां दोनों कुछ समय तक सुख से रहे। उसके बाद यूराशिया घर जाने के लिये तयार हुई। राजकुमारी ने जाने की आज्ञा दे दी और उसे एक बन्द डिब्बा दिया।

यूराशिया ने संदूक ले लिया और उसे अपने पास रखने तथा संदूक को न खोलने का देव कुमारी को वचन दिया था।

जब यूराशिया घर पहुँचा तो उसका गांव घर सभी नष्ट हो चुका था। किनारे पर बस्ती का निशान भी न था। सत्य बात यह थी कि जितने सप्ताह उसने देव कुमारी के साथ व्यतीत किये थे उतने ही सौ वर्ष व्यतीत हो चुके थे। उसके गांव और घर को नष्ट हुये सैकड़ों वर्ष बीत गये थे।

निराश में वह देव कुमारी की बात भूल गया और उसने मना किया हुआ संदूक खोल डाला। सन्दूक के

अन्दर से एक नीला धुँआ निकला और समुद्र के धरातल में फैल गया। यूराशिया में भी बड़ा परिवर्तन हो गया। वह एक नवयुवक से वृद्ध हो गया और तट पर गिरते ही मर गया।

संदूक में देवकन्या के अपने सन्दर सुखमय जीवन की सभी घड़ियाँ भर कर बन्द कर दी थीं। जैसे ही वह घड़ियां निकल भागीं यूराशिया भी दूसरे लोगों की भांति हो गया और उसके ऊपर बुढ़ापा और मृत्यु शीघ्र ही हो गई।
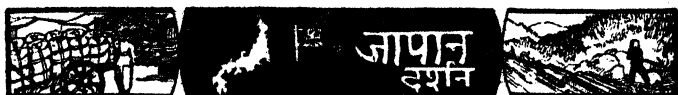
चायघर

जापान में चायघर लगभग सब कहीं पाए जाते हैं। चाय घरों में लोग भोजन किया करते हैं। चायघर छोटे बड़े सभी भांति के होते हैं। कुछ चायघर बहुत छोटे होते हैं जिनकी छत घास फूस की बनी रहती है और कुछ बहुत बड़े रहते हैं जहाँ कुलियों का समूह मेज पर बैठा चाय पीता दिखलाई पड़ता है। बड़े चाय घरों की छत तथा फर्श साफ लकड़ी के बनते हैं। लकड़ी के ऊपर सुन्दर पालिश की रहती है।

चायघरों में केवल चाय ही नहीं बिकती है। चाय-घरों में जापानी लोगों को भोजन भी मिल सकता है। देहात में यही चायघर भोजनालयों तथा होटलों का काम देते हैं। जापान के घरों की चाय अच्छी नहीं होती है। उसमें दूध और चीनी नहीं मिलाई जाती है इसलिये हमारे लिये उस चाय का पीना भी कठिन हो जाता है। वहां चाय के लिये केवल दो पैसे देने पड़ते हैं।

जब हम जापानी चायघर में प्रवेश करते हैं तो वहां के नौकर तथा नौकरानियां हमारे सामने घुटने टेक कर प्रणाम करते हैं। जहां कहीं प्राचीन सभ्यता का रिवाज

है वहां नौकर साष्टाङ्ग दण्डवत करते हैं और अपने सिर चटाई पर टेक देते हैं। उसके बाद वह दौड़ कर चाय के लिये चले जाते हैं। जापानी नौकर जब कभी किसी का अधिक आदर करते हैं तो दौड़ कर उसका काम करते हैं। चाय प्याले के अन्दर छोटी तश्तरी में लाई जाती है। चाय में चीनी अथवा दूध नहीं मिलाया जाता है।

जापान में जहां कहीं हम जावें इसी भांति चाय पीने को मिलेगी। दूकान पर यदि हम सौदा खरीदने जावें तो वहाँ भी एक के बाद दूसरा चाय का प्याला मिलता जाता है। यदि कोई चाय नहीं पीता है तो वह काकनज का फूल नमक मिलाया खा सकता है। यदि चाय घर में कोई रात को भी ठहरना चाहता है तो उसके लिये पर्दा डाल कर शीघ्र ही कमरा तयार कर दिया जाता है और गद्दा बिछा दिया जाता है।

नगरों के बड़े चाय के घरों में लोग बड़े बड़े भोज देते हैं। जापान में लोग अपने घरों में बहुत कम भोज देते हैं स्वादिष्ट भोजन के साथ ही साथ नाचने गाने वाली लड़कियों का भी तमाशा देखने में आता है।

जब कोई विदेशी जापानी भोज में भाग लेता है तो उसे वहाँ पर सभी बातें अद्भुत दिखाई पड़ती हैं परन्तु उसे किसी प्रकार की कठिनाई नहीं पड़ती है। चाय घर के द्वार पर मेहमानों को जूते उतार देने पड़ते हैं। उसे कमरे के भीतर बिछी बड़ी चटाइयों पर बैठना पड़ता है।

चाय घरों में कहीं कहीं मेहमानों के सामने मेज़ रक्खी जाती हैं और कहीं नहीं रक्खी जाती। मेज़ें लगभग एक फुट ऊँची रहती हैं। मेज़ के ऊपर मेज़पोश, चम्मच काँटा और छूरी नहीं रहती है। भोजन करने के लिये केवल चिमटा रहता है जिससे जापानी लोग चावल आदि खाते हैं।

सबसे पहले चाय परोसी जाती है। नौकर प्रत्येक व्यक्ति के सामने घुटने टेक कर चाय परोसता है। नौकर बड़े सुन्दर वस्त्र धारण किये रहते हैं। चाय के बाद सेम की रोटी (जिसमें चीनी मिली रहती है और शहद लगी रहती है) परोसी जाती है। उसके बाद छोटी तश्तरियों में मछली, सिवार, घोंघा तथा दूसरे कीड़े मकोड़ों का साग और अचार परोसा जाता है। यह सब सामान

बड़ा दुर्गन्ध करता रहता है। साथ ही साथ साके (चावल की शराब) भी परोसी जाती है।

विदेशी लोगों को उनके बीच भोजन करना बड़ा कठिन होता है। वह उपरोक्त भोजन नहीं कर सकते। बाद को उनके सामने कच्ची जीवित मछलियाँ परोसी जाती हैं जिसे चटनी में लपेट कर खाना पड़ता है। उसके बाद चावल परोसा जाता है। चावल को खाना विदेशी के लिये बहुत कठिन होता है इस कारण उसे चम्मच माँगना पड़ता है परन्तु जापानी लोग चिमटा से ही बड़ी शीघ्रता के साथ अपनी तश्तरियाँ खाली कर डालते हैं।

उसके बाद उबाली मछली का स्वाद अच्छा नहीं रहता परन्तु आलू खाने में बड़े अच्छे लगते हैं। उसके बाद सेवार घास का शोरवा तथा और कुछ दूसरे सामान परोसे जाते हैं।

तश्तरियों में बेर भी खाने के लिये आते हैं जिसे विदेशी लोग शीघ्र ही उठाते हैं परन्तु उन्हें धोका होता है। सचमुच बेर का अचार रहता है जिसमें नमक बहुत मिला रहता है। भोजन समाप्त होने के बाद नाचने गाने वाली लड़कियाँ रेशम के वस्त्र पहिन कर आती हैं उनके

मुख पर सफेद पाउडर और होंठ पर चमकीला लाल रंग लगा रहता है। वह कुछ आभूषण भी पहिने रहती है। उनका गान अच्छा नहीं होता है। गाने के साथ ही साथ नाच भी होता है।

भोजन के बाद जो कुछ बचता है उसे मेहमान लोग अपने घर लेते जाते हैं।

जापान के मन्दिर

जापानी लोग मन्दिरों के बड़े शौकीन होते हैं। वह मन्दिरों में बहुधा जाया करते हैं। जापानी लोग मन्दिरों में केवल देवताओं की पूजा के लिये नहीं जाते वरन् वह मेले और त्योहारों में भाग लेने के लिये जाते हैं। यदि किसी मन्दिर पर किसी बड़े उत्सव के समय जावें तो हम देखेंगे कि मन्दिरों के द्वार पर छातों और खड़ाउओं की पंक्तियां लगी रहती हैं। पुजारी लोग मन्दिरों में फर्श पर बैठते हैं और जब पूजन कार्य नहीं होता है तो वह गपशप लगाते तथा सिगरेट बीड़ी पीते रहते हैं। लड़के लोग भीड़ में खेलते रहते हैं।

जब पूजन कार्य समाप्त हो जाता है तो जापानी लोग मन्दिर में किसी ठंडे स्थान पर अपना सादा भोजन करने के लिये जा बैठते हैं। मन्दिर के सामने लकड़ी की एक मेहराब रहती है जिसे "तोराई" कहते हैं। किसी किसी मन्दिर के सामने कई एक मेहराबें होती हैं। मन्दिर भी लकड़ी का बना रहता है। मन्दिर के चारों ओर दूकानें तथा चायघर आदि रहते हैं। दूकानों में देवताओं के चित्र बिका करते हैं। जापान में धन के

सात देवता बड़े माननीय है। प्रत्येक घर में उनकी पूजा होती है। सब कहीं उन देवताओं की तस्वीरें मिलती

मन्दिर दर्शन करने के लिये जाने वाले लोग अपने जूतों को बड़ी तरतीब से छोड़ते हैं।

हैं। चावल के देवी देवता चावल की खेती की रक्षा करते हैं। दया की देवी भी जापान में बहुत माननीय है वह लोगों को कष्ट से बचाती तथा सहायता करती रहती है।

जापानी लड़कियां पवित्र सेम चावल और मटर की फली खरीदने की बड़ी इच्छुक रहती हैं। यह वस्तुएँ मन्दिर के नीचे बरामदे में मिल जाती हैं। इन वस्तुओं को खरीद कर वह मन्दिर की चिड़ियों और पशुओं को खिलाती हैं। मन्दिर की सीढ़ियों पर भिखारी बैठे रहते हैं। मन्दिर में पुजारी लोग अपनी प्रार्थना भी बेचा करते हैं। लोग अपनी अपनी प्रार्थनाएँ पुजारी को दे देते हैं। जिस देवता से प्रार्थना करनी होती उसी के सामने वह प्रार्थना पत्र लगा दिया जाता है। इस प्रकार माननीय देवताओं के सामने हजारों प्रार्थना पत्र लगे रहते हैं।

बहुत से मन्दिरों के बाग़ बड़े सुन्दर हैं। वहां पर जापान की बागवानी की अनोखी छटा देखने में आती है वहां बागों में बौने वृक्ष हैं जो सैकड़ों वर्ष पुराने हैं परन्तु अभी केवल कुछ ही इंच ऊँचे हैं। झाड़ियों को

बाग़बान इस प्रकार काटते हैं कि देवताओं की शकल बन जाती है।

फूल तौर बौर के समय में मन्दिरों के बागों को लोग बड़ी संख्या में देखने आते हैं। उस समय वाटिकाओं की छटा निराली होती है। फरवरी मास में बेर में फूल लगता है और काकनज के बृक्ष में अप्रैल मई में फूल लगता है। वर्ष के आखीर में इन्द्र धनुष का लाल फूल और फिर गुलदाउदी का सुनहरा फूल फूलता है। गुलदाउदी के फल को देखने के लिये धनी, निर्धन सभी लोगों की भीड़ एकत्रित होती है। जापानी लोग फूलों के इतने बड़े शौकीन होते हैं। कि गरीब से गरीब आदमी भी सैकड़ों मील चल कर सम्पूर्ण फूली वाटिका का दृश्य देखने को इच्छुक रहता है।

जापानी लोगों को बालपन से ही प्राकृतिक सौन्दर्य से प्रेम रखने की शिक्षा दी जाती है। बालपन में वह अपने माता पिता के साथ बागों में जाते हैं और बड़े होने पर अधिक उत्सुकता के साथ उन्हीं बागों का दृश्य देखते हैं।

रिकशा वाला

जापान में रिकशा वाले लोग भी बड़े प्रसिद्ध हैं। वह कुली वर्ग में गिने जाते हैं। वह स्वयम् रिकशा गाड़ी के खींचने तथा हाँकने का काम करते हैं रिकशा गाड़ी वह गाड़ी है जिसे आदमी खींचता है। जापान में यह गाड़ियां बहुत हैं और गलियों गलियों चला करती हैं।

रिकशा गाड़ी में दो पहिये रहते हैं। आदमी को बैठने के लिये गद्देदार सीट रहती है। सीट के नीचे सामान रखने के लिये स्थान बना रहता है। वर्षा से बचने को तेलदार कागज़ की छतरी गाड़ी में लगे रहती है। पकड़ कर खींचने के लिये दो लम्बे डांट लगी रहते हैं। यदि रिकशा वाला धनी होता है तो उसका रिकशा बड़ा साफ तथा सजा रहता है। गरीब रिकशा वाले भी अपना रिकशा साफ सुन्दर रखते हैं।

रात में रिकशा में कागज़ की सुन्दर एक लालटेन लगा दी जाती है यह लालटेन १८ इंच लम्बी होती है। और इसका रंग चमकीला रहता है। रिकशा साइकिल की भांति ही एक आधुनिक सवारी है। सबसे प्रथम

रिकशा गाड़ी ६० वर्ष पहले बनी थी। वह लोगों को बहुत पसंद आई इसी कारण रिकशा गाड़ियों की संख्या बहुत शीघ्र बढ़ गई। इस गाड़ी से जापान को बहुत लाभ हुआ है। पहली बात तो यह कि रिकशा गाड़ी के चलने से हजारों नौजवान शक्तिशाली लोगों को कार्य मिल गया है और स्वतंत्रा पूर्वक रुपया कमाते हैं। दूसरे यह कि रिकशा गाड़ी जापान के लिये बड़ी अनुकूल है।

जापानी नगरों की गलियां इतनी सँकरी हैं कि घोड़े गाड़ी का चलना वहां खतरनाक है पर रिकशा गाड़ी बड़े आनन्द के साथ चलती है। देहात में भी सड़कें बहुत सँकरी होती हैं। वहां धान के खेतों के मध्य रिकशा गाड़ियों का चलना आसान है। यह गाड़ियां बड़ी हलकी होती हैं।

साधारण तौर पर रिकशा गाड़ी को एक आदमी खींचता है और उसमें एक ही आदमी के बैठने के लिये स्थान रहता है। परन्तु रिकशा पर दो दो तीन तीन आदमी सवार हो जाते हैं। यदि कोई अधिक जल्दी में होता है तो दो आदमी रिकशा चलाने में लगा दिये

जाते हैं पर पहाड़ी स्थान आने पर एक आदमी पीछे की ओर चला जाता है और वह पीछे से ढकेलता है।

जापान में जहां कहीं भी हम उतरें हमें रिकशा वाले अधिक संख्या में मिलेंगे। सभी रिकशा वालों को रिकशा का लड़का कहते हैं। चाहे वह बूढ़े ही क्यों न हो। रिकशा वालों का कपड़ा भी बड़ा अच्छा रहता है। वह नीले रंग का कपड़ा पहिनते हैं और पीठ पर अपना नम्बर संकेत करने के लिये सफेद रंग से लिख लेते हैं। वह सफेद हैट लगाते हैं परन्तु धूप के समय में वह टोप के स्थान पर सिर पर एक रूमाल बांधते हैं जिससे माथे का पसीना आंख में न जा सके।

यदि हम रिकशा के अड्डे पर जावें तो सैकड़ों रिकशा, रिकशा कह कर चिल्लाते रहते हैं। जब हम किसी पर बैठ जाते हैं तो वह बैठते ही रिकशा उठा दौड़ने लगते हैं और घनी से घनी भीड़ में हो कर चलते हैं। रिकशा के ऊपर भ्रमण करने से हमें जापानी बाजार, गलियाँ और दूकानों का अच्छा दृश्य देखने में आता है।

रिकशा गाड़ियों का भाड़ा (किराया) बड़ा सस्ता होता है। जब तक हम गाड़ी पर सवार चलते रहते हैं

तब तक हमें चलती गाड़ी का किराया देना पड़ता है और जब गाड़ी खड़ी रहती है तो खड़े रहने का किराया देना पड़ता है। लगभग दो रुपये में हम आधे दिन से अधिक रिक्शा गाड़ी की सवारी कर सकते हैं। अजनबी लोगों से वहां दो आने प्रति घंटा रिक्शा वाले लेते हैं।

जापानी रिक्शा वाले विदेशी लोगों के बड़े सहायक होते हैं। वह अजनबी लोगों के पथ प्रदर्शक और सच्चे नौकर बन जाते हैं। वह प्रत्येक स्थान दिखाते हैं। अच्छे चायघरों में चाय पीने को ले जाते हैं। वह देखते रहते हैं कि कहीं चाय घर में अधिक दाम तो नहीं लिया गया। वह आवश्यकता पड़ने पर भोजन बना कर भी खिलाते हैं। कपड़ों पर ब्रश भी करते हैं। चटाई तथा बिस्तर बिछाते तथा उठाते हैं। वह अपने सवारी का प्रत्येक भांति का प्रबन्ध करते हैं।

जहां कहीं यात्री रुकता है वहीं रिक्शा वाला अपना भोजन (चावल) निकाल कर खाता है और चाय पीता है। उसके बाद तम्बाकू पीता हुआ अपने सवारी की प्रतीक्षा करता रहता है।

ग्रामीण उद्योग-धंधे

जापानी किसान बड़े परिश्रमी होते हैं। वह अपने खेत की जोताई बहुत करते हैं। वह लगातार जोताई करते हैं और त्योहार पड़ने पर ही अपना कार्य बन्द करते हैं। वह कुदाली या फावड़े से सारे खेत की भूमि खोद कर उलट देते हैं और उसके बाद फिर घास को उगने के लिये छोड़ देते हैं। घास उगने पर ही फिर उसे नष्ट करने के लिये जोताई की जाती है। जापान में बहुत सी फसलें तयार की जाती हैं जिनमें चावल मुख्य है यदि चावल की फसल नष्ट हो जाती है तो समस्त जापान में अकाल पड़ने की सम्भावना हो जाती है।

धान की उपज के लिये पानी की बहुत जरूरत होती है इसलिये धान के खेत नदी, नहर या वर्षा के पानी से खूब भर दिये जाते हैं। पानी भर जाने पर मुलायम कीचड़ में धान का पौदा लगाया जाता है। धान के पौदों को पानी के अन्दर घुस कर लगाना पड़ता है। उसमें काफी कठिनाई होती है। पौदों के लगाने के बाद घास को नष्ट करने के लिये खेत की तीन बार निराई करनी पड़ती है।

जब धान का पौदा पकने के करीब होता है तो खेत का पानी निकाल दिया जाता है और खेत सूखने

के लिये छोड़ दिये जाते हैं। जापान में छोटे से छोटे खेत कुछ वर्ग गज का और बड़े से बड़ा खेत एक एकड़ का होता है। खेतों में मेंड या बाड़ा नहीं बनाया जाता

है क्योंकि वहां भूमि की कमी है। परन्तु खेत की पहचान के लिये काफी संकेत होते हैं जिससे प्रत्येक खेत अलग अलग पहचाने जा सकते हैं।

जापान का दूसरा मुख्य व्यवसाय कागज बनाने का है। कागज़ का प्रयोग जापान में बहुत है। वहां लगभग ६० प्रकार का कागज़ बनाया जाता है। कोई कोई कागज़ तो इतना मज़बूत होता है कि उसका फाड़ना असम्भव हो जाता है। कागज़ का प्रयोग सब कहीं सभी कार्यों में होता है। जापानी लोगों के अधिकांश घर कागज़ के बने होते हैं। जापानी लोग कागज़ के प्यालों में पानी पीते हैं। कागज़ की लालटेन जलाते हैं। कागज़ में लिखने पढ़ने का काम होता है। लपेटने तथा पारसल बनाने में कागज़ का प्रयोग होता है। कागज़ की रूमाल चोगा, जूते, हैट, छाता आदि भी तयार किये जाते हैं। कागज़ का वाटर प्रूफ (जिसमें पानी न प्रवेश कर सके) भी तयार किया जाता है। इस प्रकार के कागज़ में घोर वर्षा का पानी भी प्रवेश नहीं कर सकता है।

नदियों में मल्लाह मछलियां मारते हैं। वह कई प्रकार से मछली पकड़ते हैं। बड़ी नदियों में वह जाल
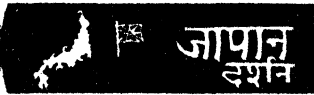
डाल कर मछली पकड़ते हैं। छोटी नदियों में बांस, डोर और कांटे के सहारे मछली का शिकार किया जाता है।

मछली पकड़ने का जाल गोला बनाया जाता है जिसका व्यास १२ से १४ फुट तक होता है। जाल के चारों ओर सीसे के भारी टुकड़े जाल डुबाने के लिये लगाये जाते हैं।

मछली मारने वाले कभी कभी तीर और धनुष का प्रयोग भी मछली मारने के लिये करते हैं। वह लोग पानी में कुछ खास फल तथा जड़ी बूटियां पानी के अन्दर रख देते हैं। फलों और जड़ी बूटियों के रस का प्रभाव पानी पर पड़ता है। जिसके कारण मछली ऊपर आ जाती है और पीड़ा के कारण इधर उधर कूदने लगती है। जब वह पानी के ऊपर आती है तो मछली मारने वाले उसे तीर मारते हैं। तीर में डोर बंधी रहती है जिससे वह मछली को किनारे खींच लेते हैं।

जिस दिन कड़ी धूप रहती है उस दिन गांव के लोग और बच्चे नदी के किनारे जाते हैं और जुगनू का शिकार करते हैं। जुगनू को पकड़ कर एक पिंजड़े में रक्खा जाता है। पिंजड़े के बीच में मिट्टी का एक

छोटा ढेर होता है जिसमें बाजरे का छोटा पेड़ रहता है। पेड़ के बगल में एक छोटा पानी का प्याला रहता है उसी प्याले में जुगनू पाला जाता है।

नदी के किनारे वाले गाँवों में धान कूटने के कलें लगाई जाती हैं। यह कलें पानी के जोर से चलती हैं। जापानी गावों के घरों का सामने का भाग खुला रहता है।

बांस का पौदा जापानी लोगों के लिये बड़ा उपयोगी होता है। बांस की लकड़ी घरों का ढाँचा बनाने के काम आती है और पत्तियों की छतें तथा झोंपड़े बनाये जाते हैं। बांस की तश्तरियां, संदूक, रकाबी (थाली) प्याले, नाली, पानी के बर्तन, मछली मारने के डण्डे, गुलदान, पंखे, छाते आदि भांति भांति के सामान तयार किये जाते हैं। नये बांस के पौदे भोजन के लिये प्रयोग किये जाते हैं।

ग्रीष्म ऋतु में संध्या के समय गांव के रहने वाले गाँव के मन्दिर के सामने खुली वायु में नाचने के लिये जमा होता है। मैदान कागज़ की लालटेनों से सजाया जाता है। वहाँ पर तोरो (टोकरी की लालटेन) नामक

लालटेन भी जलाई जाती है। तोरो लालटेन २ फुट लम्बी चौड़ी और ५ फुट ऊँची रहती है। तोरो के एक ओर मन्दिर के देवता का नाम है और दूसरी ओर गांव के किसी नव युवक की बनाई कविता लिखी रहती है।

युवा अविवाहित लड़के लड़कियां मैदान में नाचते हैं। वह एक गोले में नाचते हैं। बीच में एक आदमी खड़ा रहता है। बड़े बृद्ध लोग मन्दिर की सीढ़ियों पर बैठ कर तमाशा देखते हैं।

वर्षा से बचने के लिये लोग छाते आदि बनाते हैं। कुली लोग धान के पियाल का बड़ा चोगा बनाते हैं जिसके अन्दर पानी प्रवेश नहीं कर सकता है। फिर सिर पर वह एक बड़ा छाते की भांति टोप लगाते हैं।

जापान में वर्षा खूब होती है। गरमी में वर्षा अधिक होती है। वर्षा के दिनों में चलना बड़ा कठिन हो जाता है। सड़कें वर्षा के कारण खराब हो जाती हैं। रिक्शा चलाने वालों की तिनके की चप्पलों के ढेर के ढेर सड़क पर दिखाई पड़ते हैं। यह चप्पलें बहुत जल्द नष्ट हो जाती हैं। इन चप्पलों का मूल्य एक पैसा के लगभग

होता है। मनुष्यों की भांति घोड़ों के लिये भी घास फूस के ही जूते बनाये जाते हैं। यह जूते जल्दी ही फट जाते हैं इसलिये घोड़ों की काठी के बगल में लोग जूते सदैव बांधे रहते हैं।

जापानी लोग विदेशी लोगों को देख कर बड़े चकित होते हैं। वह विदेशी को खड़े घंटों देखते रहते है परन्तु उसे घेरते नहीं हैं और न परेशान ही करते हैं।

जापानी मार्गों में अधिकतर पवित्र स्थानों के यात्री लोगों से ही भेंट होती है। अधिकतर लोग फूजी सान पर्वत के यात्री होते हैं। फूजी सान के यात्री को हम सरलता से पहिचान सकते हैं। वह स्वेत कपड़े पहिनते हैं और घास के जूते पहिने रहते हैं। उनके सिर पर बर्तननुमा टोपी रहती है। कन्धे पर पियाल की चटाई रहती है। हाथ में एक छड़ी रहता है जो कागज़ से सजाई रहती है।

फूजीसान के यात्रा में बहुत कम खर्च होता है। यात्री लोग सादा भोजन करते हैं और मार्ग के गावों में उन्हें ठहरने के लिये स्थान मिल जाता है यदि वह चाय घरों में ठहरते हैं तो भी उन्हें बहुत कम खर्च करना

पड़ता है। गाँव के रहने वाले फूमा सान के यात्रियों की बड़ी खातिर करते हैं और इन्हें बड़े आराम से ठहराते हैं।

जापानी घर दिन में खुले रहते हैं परन्तु रात में वह संदूक की भांति बन्द कर दिये जाते हैं। सोने के समय गांवों में सन्नाटा छा जाता है। प्रत्येक गांव में चौकीदार होता है जो चोरों और आग से गांव की रखवाली करता है। चौकीदार दो डंडों को आपस में खट खट लड़ाता हुआ इधर उधर घूमता रहता है।
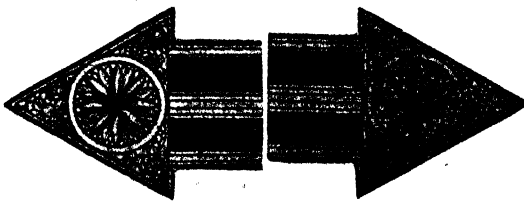
पुलिस का आदमी और सिपाही

पुलिस का आदमी जापान में सबसे अगुवा और बड़ा भद्र पुरुष माना जाता है। वह समूराई वंश का होता है। वह उत्तम वंश का होता है इस लिये सभी लोग उसका आदर करते हैं। वह चार फुट दस इंच से ५ फुट तक ऊँचा होता है। जब समूराई लोगों की सेना भंग की गई तो उनके लिये बहुत कम रोज़गार थे जिनकी ओर वह लग सकें। वह खेती तथा व्यापार से घृणा करते थे। कुछ लोगों ने नौकरी कर ली, कुछ मुद्रक (छापने वाला) हो गये और कुछ लोग पुलिस बन गये।

समूराई लोग नौकरी पेशा इस लिये स्वीकार किया कि यह पेशा जापान में आदरणीय माना जाता है। वह मुद्रक इसलिये हुये कि समूराई लोग शिक्षित थे और यहीं जापानी पेचीदे वर्ण माला का काम संचाल सकते थे। पुलिस विभाग में वह अपने ऐश्वर्य तथा लड़ाकू स्वाभाविक गुण के कारण घुसे। उनका जापानी लोगों पर बड़ा प्रभुत्व का कारण भी है।

साठ वर्ष पहले जापानी जाति को दो भागों (शासक

और प्रजा) में विभाजित किया जा सकता था। शासक जाति में राजे नवाब तथा उनके फहकारी लोग थे जिनकी संख्या २० लाख थी। शेष तीन करोड़ अस्सी लाख प्रजा थी।

प्राचीन काल में डैमियो (राजा) लोग यात्रा में जन्म लेते थे। उनका जन्म कानो नामक बन्द गाड़ी के डिब्बे में होता था। गाड़ी की रक्षा समूराई लोग करते थे। यदि कोई साधारण व्यक्ति जुलूस के सामने आता था तो उसे मार्ग से हट जाना पड़ता था या सिर के बल पृथ्वी पर (जुलूस पार हो जाने के समय तक) लेट जाना पड़ता था। यदि कोई ऐसा न करता तो समूराई तलवार से उसका सिर काट डालते थे और फिर उसकी कोई चर्चा न होती थी। इसी कारण प्रजा समूराई लोगों को आदर की दृष्टि से देखने लगी थी। आज वही प्रजा का आदर पुलिस के लिये है।

जापान की पुलिस अपनी चतुराई और कुश्ती लड़ने के कारण भी आदर करने योग्य है। जापानी पुलिस जापानी कुश्ती में बड़ी निपुण होती है। जापानी कुश्ती को आज कल जियु-जितस कहते हैं। इस लड़ाई में चतुर

लड़का अपने जोड़ा के पहलवान को ऐसा पकड़ लेता है कि वह उसके बिलकुल बस में हो जाता है और फिर वह उसे चाहे जिस तरह पटक देवे। जापानी पुलिस हाथ की कलाई पकड़ कर ऐसी पटकनी लगाते हैं कि मनुष्य के खासी चोट आ जाती है।

पुलिस वाले आपस में लड़ाई नहीं करते हैं। वह शीघ्र ही बिना प्रश्न के आज्ञा मान लेते हैं। जहाँ कहीं भीड़ एकट्ठी हो जाती है एक वर्दी वाले पुलिस के आते वह छिन्न भिन्न हो जाती है। किसी की हिम्मत भी पुलिस के आदमी से बातचीत करने की नहीं होती है।

शिक्षित होने के कारण पुलिस का आदमी कला तथा कलाकार के साथ बड़ी सहानिभूति रखता है। विदेशी कलाकारों का वह बड़ा आदर करता है। वह बड़ा हँसमुख तथा सज्जन होता है।

जापानी सैनिक बड़ा प्रशंसनीय है। संसार में आज उसकी कीर्ति की प्रशंसा हो रही है। जापानी सैनिकों की बहादुरी, सहन शीलता और आज्ञापालन का प्रमाण रूसो-जापानी युद्ध में भली भांति मिल चुका है। जापान ने अपने को संसार के सबसे बड़े सैनिक

तथा सामुद्रिक शक्तिशाली राष्ट्रों में होने का प्रमाण दे दिया है।

जापानी सैनिक का निर्माण जापानी घरों में होता है। बालपन से ही उसे माता पिता की आज्ञापालन तथा देश सेवा की दो मुख्य शिक्षाएँ दी जाती हैं। वह बिना सोचे विचारे और प्रश्न किये ही आज्ञापालन करता है। आज्ञापालन करना उसकी प्रकृति का एक प्रधान अंग हो गया है। जापानी सैनिक युद्ध शिक्षा में कुशलता प्राप्त करके सेना में प्रवेश करता है और शीघ्र ही वह अपने अफसर का आज्ञा पालक सैनिक बन जाता है।

देश-सेवा के कारण वह थोड़े समय में ही पक्का सिपाही बन जाता है। वह अपने राजा तथा देश के लिये अपनी जान निछावर करने के लिये हर समय तत्पर रहता है। वह अपने को अपने देश का पक्का सेवक होने का सबूत देने के लिये लालायित रहता है। वह अपने कर्तव्य पालन में किसी बात का भय नहीं खाता है। वह खुशी के साथ अपने सैनिक कार्यों को पूरा करता है। वह अपने बूट की सफाई उसी कुशलता से करता जैसे वह अपनी बड़ी बन्दूक की करता है। सैनिक

कर्तव्य पालन के कारण ही जापान को रूस पर अद्भुत विजय प्राप्त हुई है।

युद्ध में जापानी सैनिक किसी भी आज्ञा का टाल मटोल नहीं करता है। गत युद्ध में बहुत सी जापानी सेनाओं ने अपने प्राण इसी लिये अर्पण किये थे कि वह अपने पीछे आने वाली सेनाओं के लिये मार्ग बना रही हैं। उन्हों ने हँसते हुये अपने प्राण अपने प्यारे देश के लिये अर्पण किये थे।

संक्षिप्त इतिहास

हमारे देश की भांति जापान का इतिहास भी पौराणिक तथा कल्पित कथाओं के साथ आरम्भ होता है। आदि काल के इतिहास में देवताओं और गंधर्वों का वर्णन आता है। ऐनो जापान के आदि निवासी बताए जाते हैं। ईसा से १५ सौ वर्ष पूर्व एशिया से मंगोल जाति जापान में गई और उसने ऐनोस जाति को दबा कर अपना अधिकार जमाया। ६६० वर्ष ईसा के पूर्व जिम्मो तेन्नो का आक्रमण जापान पर हुआ। ५५२ ई० में बौद्ध भिक्षु कोरिया से जापान गये। बौद्ध लोगों ने जापान में पुस्तकों का संचार किया और वहां सम्वत (वर्ष तथा तिथि) का आरम्भ भी हुआ। कुछ समय पश्चात् ही बौद्ध धर्म जापान का राज्य-धर्म होगया सातवीं सदी तक मिकाडो (जापान के सम्राट) की शक्ति राज्य दरबार के कार्य कर्ताओं के हाथ चली गई। बारहवीं सदी में तैरा और मिनामोटो वंश आपस में राज्य के लिये लड़ते रहे। यह बड़ी लड़ाई बहुत समय तक चलती रही और जापानी इतिहास में जेन्जी और हीके के युद्ध के नाम से प्रसिद्ध है। इस युद्ध पर लेखकों ने बड़ी बड़ी पुस्तकें लिखी हैं और कलाकारों ने अपनी कला का प्रदर्शन किया है।
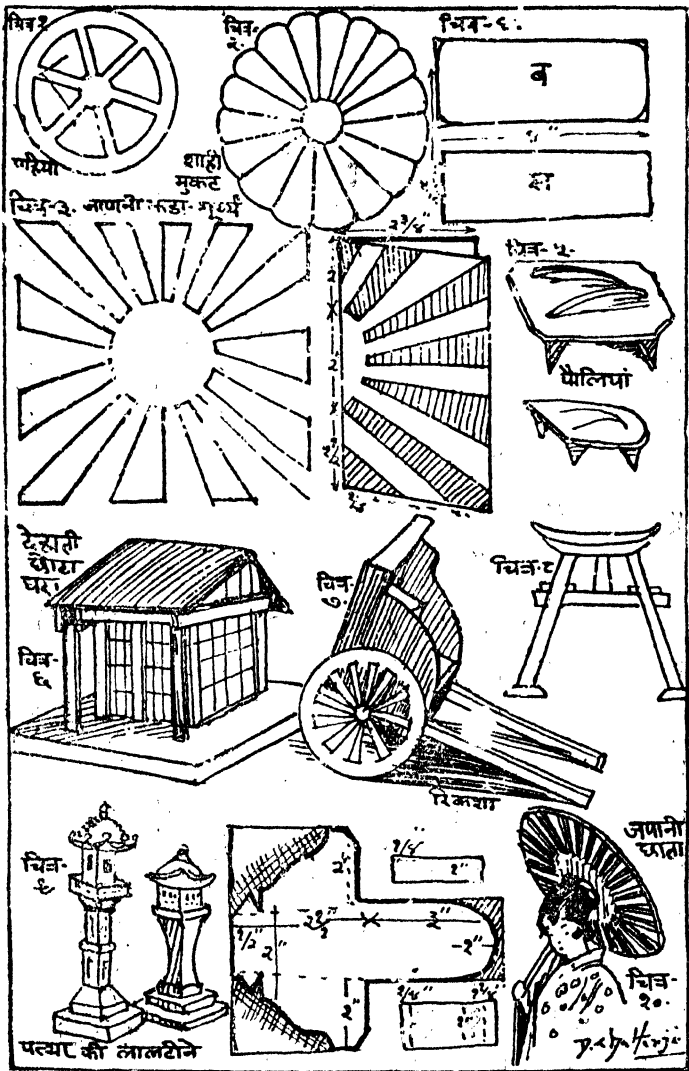
जापान के जीवन सम्बन्धी कुछ चित्र

तेरहवीं सदी तक शासन की बागडोर शोगन या प्रधान सेनापति के हाथ आगई थी और मिकाडो नाममात्र के लिये सम्राट रह गया था। तेरहवीं सदी ई० के अंतिम काल में मंगोल जाति ने काबूली खां के नेतृत्व में कई बार जापान पर आक्रमण किया था परन्तु पीछे हटा दी गई थी। सोलहवीं सदी में जापान का प्रधान सेनापति हाइडयोशी था वह बड़ा साहसी तथा कूटनीतिज्ञ था। उसने राज्य शासन की समस्त बागडोर अपने हाथ में ले ली थी और सम्राट को राज्य शासन में भाग देने से बिलकुल इन्कार दिया था। वह जापान का एकाधिपत बन बैठा था। उसके शक्तिशाली बनने का मुख्य कारण यह था कि उसने भूमि को बहुत छोटे छोटे भागों में बांट कर भूमिपतियों को दे दिया था। छोटे भूमिपति इतने शक्तिहीन तथा निर्बल हो गये थे कि वह हाइडयोशी के विरुद्ध सिर नहीं उठा सकते थे।

सोलहवीं सदी के मध्य काल में कुछ पुर्तगाली मल्लाह जहाज टूट जाने के कारण जापानी तट पर जा पहुँचे। और कुछ समय के पश्चात् मेराडेज पिटा (डच) सौदागर का जहाज भी जापानी तट पर जा लगा।

जापान विदेशी लोगों के साथ व्यापारिक और किसी और दूसरे प्रकार के सम्बन्ध नहीं करना चाहता था परन्तु पुर्तगालियों और डच लोगों के पहुंच जाने से जापान को व्यापार करने पर मजबूर होना पड़ा। पुर्तगाली तथा डच दोनों के साथ जापान का व्यापार होने लगा यद्यपि व्यापार पर कई प्रकार की रुकावटें लगाई गई थीं। उसके बाद जापान में ईसाई मत का प्रचार हुआ और बहुत से जापानी ईसाई बन गये। जो जापानी ईसाई हुये उन पर जापान सरकार की ओर से बड़ा अत्याचार हुआ जिससे वह लोग पुर्तगालियों के साथ मिलकर जापानी सरकार का तख्ता उलट देने का षड्यंत्र करने पर मजबूर हो गये। षड्यंत्र का पता चल गया और पुर्तगाली लोग जापान से निकाल बाहर किये गये।

सत्रहवीं सदी में विलऐडम्स नामक प्रथम अँग्रेज जापान गया। उसने अपना घर जापान में बनाया। वह एक बड़ा जहाज बनाने वाला कारीगर था। उसकी कारीगरी का जापान पर इतना बड़ा प्रभाव पड़ा कि जापान के सम्राट ने उसे जापान से बाहर जाने

की मनाही कर दी। येदो की एक सड़क ऐडम्स के नाम से प्रसिद्ध है। आज भी वहां ऐडम्स की याद में सालाना जलसा मनाया जाता है।

१८५२ ई० में कुछ अमरीकन मल्लाह जहाज टूट जाने के कारण जापान पहुँचे। उन मल्लाहों के ऊपर बड़ी सख्ती की गई। एम० सी० पेरी अमरीका से विरोध करने के लिये भेजा गया। पेरी को उसके कार्य में सफलता हुई। उसने जापान के साथ संधि भी किया जिससे जापान और अमरीका के मध्य व्यापार आरम्भ हो गया।

१८६८ ई० में शोगन का पद तोड़ दिया गया और मिकाडो एकाधिपति बनाया बनाया गया। जमीदारी प्रथा का अन्त हो गया। जापान को शक्तिशाली बनाने के लिये योरुप और अमरीका से अध्यापक, सैनिक अफसर तथा इंजीनियर बुलाये गये। पश्चिमी कानून का संचालन जापान में किया गया। उच्च श्रेणी वालों ने अपना पुनः संगठन किया। जापान के लिये नया विधान स्वीकार हुआ और १८६१ ई० में जापान को

प्रथम पार्लियामेंट की बैठक हुई। इन सुधारों के करने में बड़ी बड़ी रुकावटें पड़ीं। जब तलवार बांधने की मनाही की गई तो सतसुमा प्रान्त के समूराई लोगों ने बलवा कर दिया उन्हें दबाने में बड़ा खून हुआ और २० हजार आदमी मारे गये।

कोरिया वासी जापानी चीनी

१८९४ ई० में कोरिया के विषय में चीन जापान युद्ध आरम्भ हो गया जिसमें चीन की पराजय हुई। कोरिया का प्रान्त स्वतंत्र किया गया चीन ने जापान को फारमूसा का द्वीप तथा बहुत सा फौजी हर्जाना दिया।

१८९९ ई० में चीन में बोक्सर स्थान में बलवा हुआ

और उसके बाद संधि के विरुद्ध रूसी लोग मञ्चूरिया पर अधिकार जमाते गये। इस कारण जापान को नाखुशी

जापान साम्राज्य की वृद्धि
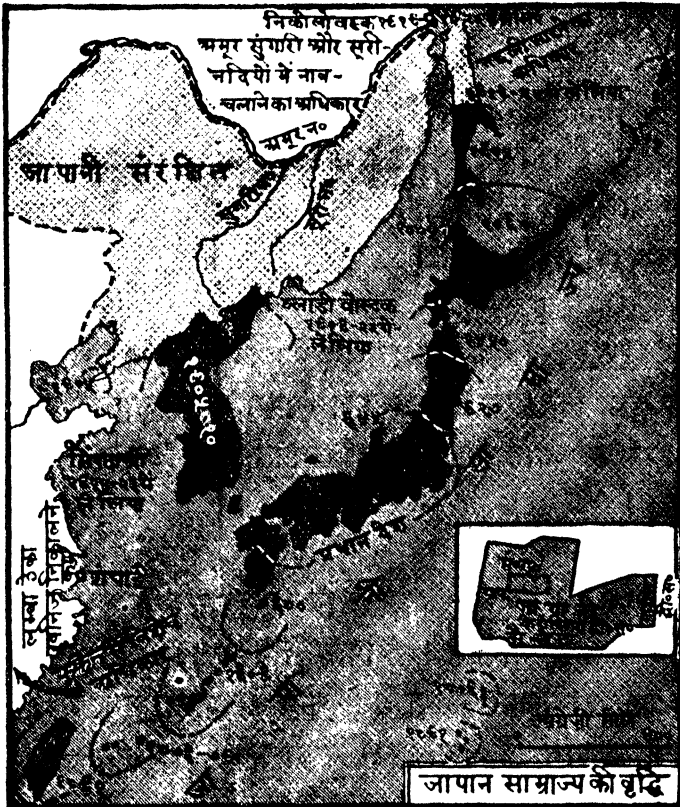
हुई और १६०४ ई० में रूसा जापानी युद्ध हुआ। जापान को युद्ध में कई स्थानों पर विजय प्राप्त हुई रूसी सेना पीछे हटा दी गई और रूसी जलसेना नष्ट कर दी गई।

पोर्टस माउथ न्यूहैम्प सागर में रूस जापान के मध्य १६०५ ई० में संधि हुई। जापान को सखालिन द्वीप का आधा भाग आर्थर बन्दरगाह कोरिया और उसका समीपवर्ती प्रदेश मिला।

१६१४ ई० के गत महायुद्ध में जापान ने मित्र राष्ट्रों का साथ दिया था जिसके फल स्वरूप उसे प्रशान्त महासागर के जर्मन द्वीप तथा कियाव-चियाव जापान को मिले।

१६३४ ई० में चीन के साथ युद्ध आरम्भ हुआ है है अभी युद्ध जारी है। जापान ने समस्त मंचूको प्रान्त पर अधिकार जमा लिया है। चीन का उत्तरी तथा पूर्वी भाग जापान के अधिकार में हो चुका है जापान ने इंडोचीन पर भी अधिकार जमा लिया है।

जापान का प्रथम मिकाडो (सम्राट)

आदि काल में आकाश और पृथ्वी अलग अलग न थे। सभी मिश्रित वस्तुओं का अंडे के आकार का गोला था जिसमें एक कीड़ा था उस गोलेकार रूप का साफ तथा वायु वाला भाग का और आकाश बन गया और भारी मोटे पदार्थ से पृथ्वी की रचना हुई। बालक पृथ्वी पानी ने तेल की भांति तैरने तथा मछली की भांति इधर उधर घूमने लगी। गर्म पृथ्वी से झाड़ी की भांति एक पदार्थ निकला जिससे दो देवताओं की उत्पत्ति हुई जो आकाश में रहने के लिये चले गये। इन देवताओं के पश्चात् सात देवताओं के कुटुम्ब की रचना हुई। प्रथम पाँच जोड़ों के स्त्री अथवा पुरुष के चिन्ह न थे। अन्तिम दो इज़ानागी और इज़ानामी थे जिनमें सन्तान उत्पन्न करने की शक्ति थी। आकाश वाले देवताओं ने इज़ानागी और इज़ानामी को एक मणि का बना भाला दिया और संगठित होकर पृथ्वी पर जीव उत्पन्न करने की आज्ञा दिया। दोनों देवता आकाश के तैरते पुल पर खड़े थे। इज़ानागी ने भाले को नीचे खींचा जिससे कीचड़ तथा नमकीन पानी की बूँदें नीचे गिरीं और उसी से अवाजी

का द्वीप बना जिस पर दोनों देवता उतरे और भाले को गाड़ कर द्वीप का भ्रमण करने के लिये अलग अलग चल दिये। जब वह आपस में फिर मिले तो उनमें प्रेम का संचार हो चुका था। वह एक दूसरे के प्रेमी बने। इज़ानागी पुरुष तथा इज़ानामी स्त्री के रूप में हो गये। उसके बाद जापान के दूसरे द्वीपों की रचना हुई और पृथ्वी के देवताओं के समागम से गेहूँ, चावल, बाजरा, ज्वार आदि भांति भांति के अन्नों को उत्पत्ति हुई। धीरे धीरे समस्त भूमि भिन्न भिन्न प्रकार के पदार्थों और वृक्षों से भर गई।

पृथ्वी के नीचे अन्धकार था। एक बार जब इज़ानामी अपने पति से नाराज़ हुई तो वह अन्धकार स्थान में चली गई। वहाँ उसने अग्नि देवता को जन्म दिया और मर गई। इज़ानागी अपनी स्त्री को बुलाने गया। परन्तु वहाँ उसने दुष्ट आत्माओं की दुनिया देखी। वह भागा और समुद्र में उसने अपने शरीर को धोया जिससे संसार में बुराइयों की उत्पत्ति हुई।

इज़ानामी पृथ्वी से आकाश गई और वहाँ वह सूर्य

बनी। उसका पुत्र चन्द्रमा बना। सूर्य को जापान में अमातेरासू और चन्द्रमा को सुसानू कहते हैं।

पृथ्वी के देवताओं और राक्षसों की वृद्धि होने पर उनमें बड़ा संघर्ष हुआ तो सूर्य ने अपने पौत्र निनीगी को पृथ्वी पर राज्य करने के लिये भेजा। सूर्य ने अपने पौत्र को एक दर्पण, ईश्वरीय स्वभाव की तलवार और बिल्लौर (स्वच्छता) की एक गेंद दिया था।

निनीगी के साथ देवताओं की सेना पृथ्वी पर कुशिमा नामक पर्वत पर उतरी। यह पर्वत सतसुमा और ह्युगा के मध्य स्थित है। निनीगी ने राक्षसों का वध किया और शान्ति का राज्य स्थापित किया। उसी समय पृथ्वी और आकाश अलग अलग हो गये।

निनीगी के दो पुत्र हुये एक का नाम फायर फेड (कुम्हलाई अग्नि) और दूसरे का नाम फाएर ग्लो (चमकती अग्नि) पड़ा। एक बार दोनों भाइयों में झगड़ा हुआ तो फायर फेड समुद्र के नीचे चला गया और वहां उसने वहां के राजा से ब्याह कर लिया। समुद्र के राजा ने घड़ियाल की पीठ पर ऊपर भेजा। घड़ियाल के साथ समुद्र की बड़ी लहरें थीं जिससे पृथ्वी पर बड़ा

तूफान आया और फाएर ग्लो ने माफी मांगी। वह अपने भाई का नौकर बन गया।

फाएर फेड राजकुमार ने समुद्र तट पर एक झोपड़ा बनाया और माहीगीर पक्षी से उसकी छत तयार किया झोपड़े के अन्दर एक बच्चा उत्पन्न हुआ जिसका नाम जिम्मूतेत्रो पड़ा वही जापान का प्रथम मिकाडो (सम्राट) है।

जिम्मूतेत्रो बड़ा बहादुर तथा शूरवीर हुआ। वह बड़ा भारी योद्धा था। कहा जाता है कि उसे आकाश से तलवार प्राप्त हुई थी उसने पृथ्वी के समस्त जीव-धारियों को अपने अधिकार में अपने बल द्वारा कर लिया था। जिम्मू ने काशीवबरा में अपना महल बनाया था जो यमातो द्वीप में है। इस प्रकार जापान के सम्राटों के वंश का आरम्भ हुआ है।

जापान के ऐनू लोग

जापान के मूलनिवासी ऐनू लोग ही हैं। इस समय

जापान के मूल निवासी। ऐनू लोग वर्तमान जापानियों से उसी तरह से भिन्न हैं जिस तरह कोल और भील दूसरे हिन्दुस्तानियों से हैं।

उनकी जन-संख्या केवल पन्द्रह बीस हज़ार है। वे इस समय जापान के उत्तरी ठंडे येजो या होकैडो द्वीप और

ऐनू लोगों के शरीर पर बाल (पीठ की तरफ)

एल्यूशियन द्वीप समूह में ही रहते हैं। पर वर्तमान

ऐनू लोगों के शरीर पर बाल (सामने से)

जापानियों के आने के पहले वे सभी द्वीपों में फैले हुये थे।

भालू के उत्सव और मृतक संस्कार के बाद वे शरीर अवश्य धोते हैं। कुछ लोग अक्सर स्नान करते हैं। इनके बच्चों के ऊपर भी मैल जमा रहती है। ऐनू लोगों को खेती का काम पसंद नहीं आता है। ये शिकार खेलने में वे बड़ा ही उत्साह दिखलाते हैं। नौकरों को पहाड़ की ताजी हवा खाने, घोड़े की सवारी करने, दौड़ने या मछली मारने के लिये एक दिन की छुट्टी देनी ही पड़ती है। इन लोगों को नशे का भी बड़ा शौक है। अगर वे किसी जापानी अफसर का काम करते हैं तो वेतन में उनको शराब मिलती है। फिर भी वे अच्छे घुड़सवार होते हैं।

अधिकतर काम स्त्रियों को ही करना पड़ता है। नवम्बर दिसम्बर में वे मरदों को मछली मारने में भी मदद देती हैं। स्त्रियां सिलाई के काम में भी चतुर होती हैं। भिन्न-भिन्न ज़िलों में कपड़ों की कढ़ाई का काम भिन्न है। जब किसी ज़िले का ऐनू यात्रा करता है तो उसके कपड़ों के नमूने से लोग जान जाते हैं कि वह

किस ज़िले से आता है। सरदी के दिनों में अत्तूश-कोट की पीठ पर कुत्ता, भालू, हिरण, भेड़िया या लोमड़ी

ऐनू के कपड़े पर निशान

की खाल सी दी जाती है। अत्तूश एल्म पेड़ की छाल

का बना होता है। जूते हिरण या साल्मन मछली की खाल के बने होते हैं। स्त्रियाँ अपनी टांगों में घास लपेट
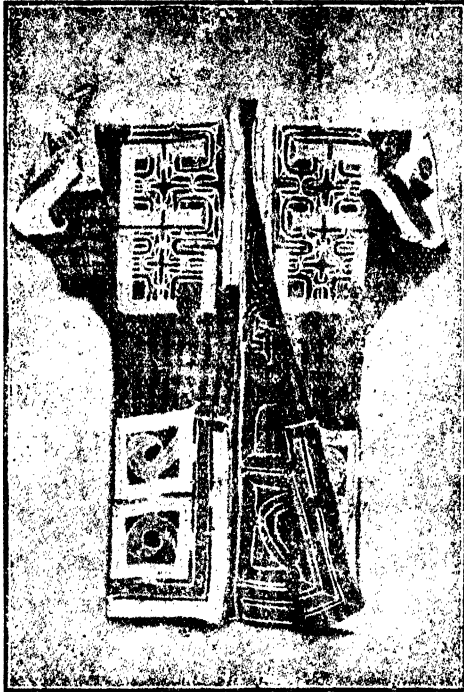
ऐनू पुरुषों का कोट

लेती हैं। रात को स्त्री पुरुष सभी सिर पर कपड़ा लपेट कर सोते हैं।

इन लोगों का आभूषण या कोष सोना और चाँदी नहीं होता है। वे जापानी रंगीन बर्तन और पुरानी तलवारों को अधिक मूल्यवान समझते हैं। वे फेरी वालों को खाल या मछली देकर आवश्यक सामान मोल ले लेते हैं। स्त्रियां शीशे की गोलियां, मालायें और छल्ले बहुत पसंद करती हैं।

ऐनू लोगों के गाँव अक्सर नदी के किनारे होते हैं वे अपने झोपड़ों की छत पहले बनाते हैं फिर वे उसे बाँस या लकड़ी के लट्ठों पर टांग देते। छप्पर को तयार करने में कई दिन लग जाते हैं। छोटे छोटे सूराख खिड़की का काम देते हैं। ये लोग पूर्व की ओर की खिड़की के पास सूर्योदय के समय प्रार्थना करते हैं इसलिये इस खिड़की और दक्षिण की ओर वाली खिड़की में से झांकना बड़ा बुरा समझा जाता है। पश्चिम की ओर दरवाज़ा होता है। बाहर की ओर कुछ दूर सामान रखने की जगह (गोदाम) होती है।

आलू, शाक, मूल, माँस, मछली इनका प्रधान भोजन है। पहले अतिथि, फिर पति और उसके बाद दूसरों को भोजन परोसा जाता है। इनके यहां बर्तन
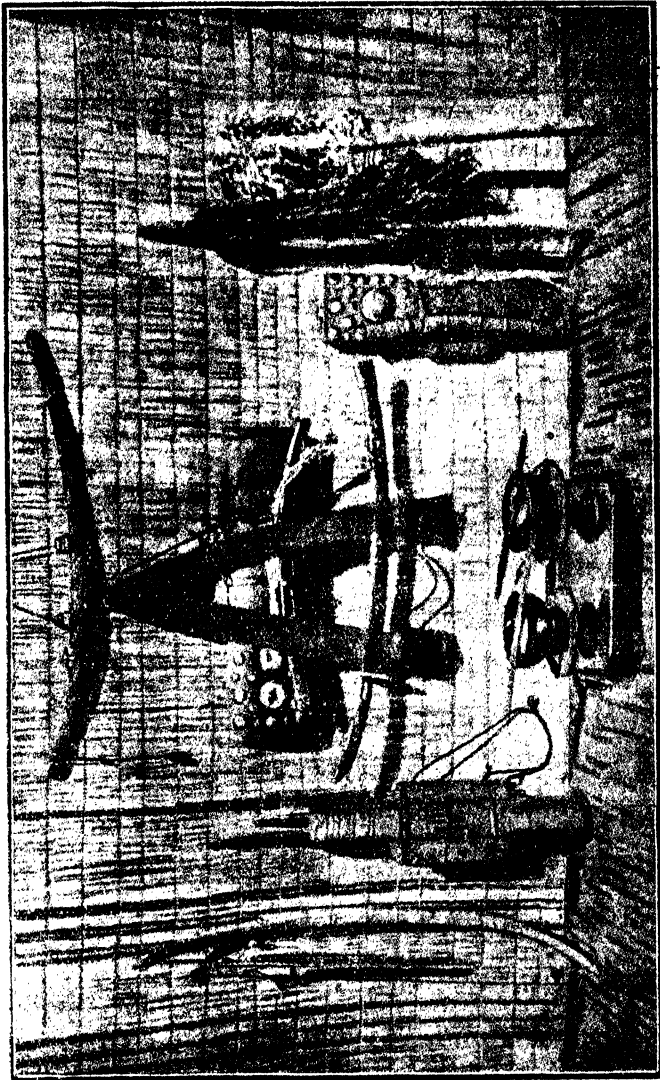
ऐनू लोगों का खज़ाना
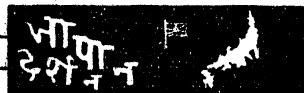
अधिक नहीं होते हैं। जब कोई बीमार पड़ता है तब वे अपने इष्टदेव के लिये बन से लकड़ी लाकर और छील कर 'इनाओ' को भेंट चढ़ाते हैं। इस तरह की भेंट और अवसरों पर भी चढ़ाई जाती है। इनके अभिवादन करने का ढङ्ग कुछ कुछ हिन्दुस्तानी ढंग से मिलता है। इनको धार्मिक शिक्षा अधिकतर कथा-कहानियों द्वारा होती है।

किसी के मरने के समय वे बड़ा शोक करते हैं। कोई अग्नि को दुहाई देता है कि यदि इसमें गरमी न रही तो फिर अग्नि को कोई नहीं मानेगा। कोई ईश्वर से शिकायत करता है कि अग्नि अपना कर्तव्य पालन करने में बिमुख है। मृतक को वे कपड़े में लपेट कर गाड़ देते हैं। वे उसके पास पानी का घड़ा और भात का पिंड या बाज़ार की रोटी भी चढ़ाते हैं। वे बाल कटाते हैं अथवा शिर मुंडन कराते हैं। अन्त में स्नान कराते हैं या हाथ मुह धोते हैं। पहले वे उस झोपड़े को भी जला देते थे जिसमें कोई मरता था। अब वे ऐसा तो नहीं करते हैं लेकिन वे मृतक को यथा शीघ्र भुलाने का प्रयत्न करते हैं।

ऐनू लोगों का झोपड़ा

ऐनू लोगों में कहावत है कि यजो द्वीप को एक देवी और एक देवता ने बनाना। देवी को पश्चिमी तट और देवता को पूर्वी तट बनाया पड़ा। जैसी ही देवी तट बनाने जा रही थी वैसे ही उसकी बहिन आ गई वह अपना काम छोड़कर बातों में लग गई। देवता ने इस बीच में लगातार काम करके पूर्वी तट को पूरा कर दिया। यह जान कर देवी बड़ी डरी। उसने जल्दी जल्दी तट को पूरा किया। इसी से पश्चिमी तट बहुत ही ऊँचा नीचा और खुरदरा है। जब कोई स्त्री बहुत बातूनी होती है तो उसको इसी देवी की याद दिलाई है जिसके कारण तट ठीक न बन सका।

ऐनू लोगों में दंड देने और अपराधी को अपराध स्वीकार करवाने की प्रथा विचित्र है। एक अपराधी के हाथों पर गरम पत्थर या लोहा रक्खा जाता है। यदि उसके हाथ न जले तो वह निर्दोष समझा जाता है। कभी अपराधी गरम पानी के कड़ाहे में बिठाया जाता है कभी अपराधी एक नांद के सामने बिठाया जाता है और उसे सारा पानी पीना पड़ता है।

एक प्याले में अपराधी को पानी पिलाया जाता है।

पानी पीकर वह सिर के ऊपर से प्याले को फेंक देता है। अगर प्याला सीधा गिरे तो निर्दोष और उल्टा गिरे तो दोषी समझा जाता है। कभी कई बार तम्बाकू और तम्बाकू का पानी पिलाया जाता है। कभी हाथ पैर तान कर खम्भों में बाँध दिये जाते हैं।

विवाह के अवसर पर ज्वार बाजरा भात और शराब की दावत दी जाती है।

योशिटसूने को कहानो

७०० साल बीते जापान में जापानी साम्राज्य के लिये तैरा और मिनामोटो जातियों में युद्ध छिड़ा। यह जातियां हीके और जेञ्जी नाम से भी प्रसिद्ध हैं। यह दोनों जातियां बहुत वर्षों तक एक दूसरे से लड़ती रहीं कभी मिनामोटो जाति शक्ति शाली हो गई और कभी तैरा जाति का प्रभुत्व रहा। आखिर योशीतोमो का जन्म मिनामोटो घराने में हुआ। वह एक बहादुर जनरल था। उसके समय में जापान के अन्दर गृह युद्ध छिड़ा था और दो व्यक्ति जापान की गद्दी के लिये लड़ रहे थे। एक को तैरा और दूसरे को मिनामोटो घराना सहायता दे रहा था।

योशीतोमो मिनामोटो घराने की। ओर से लड़ रहा था। उसे तैरा जाति ने परास्त कर दिया। वह और उसके भागते हुये नगर के द्वार पर पकड़े गये जिन्हें कियोमोरी और उसके सैनिकों ने कत्ल कर डाला।

योशीतोमों के मृत्यु के पश्चात् उसकी स्त्री अपने आठ पुत्रों को लेकर अपने दिन बिताने लगी। प्रथम पांच

बालक पहली स्त्री से थे। अंतिम तीन बालक दूसरी (तोकिवा कोजेन) स्त्री से थे। सबसे छोटे आठवें बालक का नाम यूशीवाका था। उसी बालक के संबन्ध में यह कहानी है। यूशीवाका और योशित्सूने एक ही व्यक्ति का नाम है।

जब यूशीवाका का पिता मरा तो वह अपनी मां की गोद में एक छोटा बालक था। कियोमोरी मियनामोटो जाति वालों से इतना घृणा करता था कि यदि वह उसकी नजर के सामने पड़ जाते थे तो शीघ्र ही मार डाले जाते थे।

अपने बच्चों को जीवित रखने के लिये तोकिवा-कोजेन देहात में चली गई और वहां वह अपने तीनों बच्चों को छिपा कर रहने लगी।

कियोमोरी ने तोकिवा कोज़ेन और उसके बच्चों के पता लगाने की बड़ी खोज की परन्तु उनका पता न चला। उसे भय था कि यदि वह जीवित रहेंगे तो अवश्य ही योशी तोमो की मृत्यु का बदला लेंगे।

जब कियोमोरी को कोई मार्ग तोकिवा के पकड़ने को न रहा तो उसने तोकिवा की माता को पकड़ा और

उसे कारागार में डाल कर देने लगा। जब तोकिवा को अपनी मां की गिरफ्तारी का पता चला तो वह बड़ी दुखी हुई और अपनी मां को छुड़ाने की तरकीब सोचने लगी। आखिरकार उसने स्वयम् कियोमोरी के पास जाकर अपना आत्म समर्पण करने का इरादा किया।

वह अपने बालकों को लेकर कियोमोरी के पास पहुँची और अपनी मां को छोड़ने तथा अपने बच्चों की जान बखसने की प्रार्थना उसने कियोमोरी से की। तोकिवा बड़ी सुन्दरी थी। उसका शरीर गुलाब की भांति कोमल था। उसके रोने गिड़गिड़ाने का असर कियोमोरी पर पड़ा और उसने तोकिवा से कहा कि यदि तुम मेरी स्त्री बन जाओ तो मैं तुम सब को स्वतंत्र कर दूँ। तोकिवा बड़ी चतुर स्त्री थी। उसने अपने अपने पुत्रों और अपनी मां के प्राण बचाने तथा अपने पति का बदला चुकाने के लिये अपने पति के हत्यारे बैरी की स्त्री बनना स्वीकार किया। इसी कारण उसने अपने सतीत्व की भेंट चढ़ा दी और स्त्री बनना स्वीकार किया।

तोकिवा अपने छोटे बालक यूशीवाका को खिलाते और पिलाते, खेलाते और शयन कराते समय भी पिता

की याद दिलाती रहती थी और पिता की शूरवीरता का वर्णन करती रहती थी।

जब बालक सात वर्ष का हुआ तो कियोमी ने उसे लेकर पुजारी के पास रख दिया जिससे वह साधु बन जावे। वह तोकोबो मठ में रक्खा गया था। यूशीवाका प्राकृतिक रूप से ही बड़ा ज्ञानी बालक था। उसने शीघ्र ही अपनी तीव्र बुद्धि से पुजारियों को चकित कर दिया था। वह अपने मित्रों तथा अध्यापकों से अपने पिता योशीतोमो और अपनी जाति मिना मोटो का हाल सुना करता था। सुनते सुनते उसे अपने मां के शब्द याद आ गये और तब वह उनके अर्थ भली भांति समझ गया उसने वीर बनने और अपने पिता का बदला चुकाने का पक्का इरादा किया।

एक रात उसने स्वप्न देखा कि उसकी मां कह रही है "अपने पिता का बदला लेना। मैं मर रही हूँ। जब तक तुम बदला न चुकाओगे मुझे कब्र के अन्दर शान्ति प्राप्त न होगी"। वह जाग पड़ा और दुःखित दशा में चिल्ला उठा "प्यारी मां मैं अवश्य बदला लूँगा"।

उसी रात के बाद से वह रात को जब सब सो

जाते तो मठ के बाहर बन में जाता और लकड़ी की तलवार से वृक्षों के मध्य तलवार चलाने का अभ्यास करता।

एक रात जब वह अपने स्वयम् सीखे पाठ पर तलवार लिये वृक्षों के मध्य इधर उधर घूम रहा था तो बन में आकाश पर बादल छा गये तोफान आया और वर्षा होने तथा बिजली चमकने लगी। उसी समय उसके सामने १० फुट ऊँचा एक राक्षस आ खड़ा हुआ। वह तेङ्गू लोगों का राजा राक्षस था।

राक्षस ने लड़के से कहा डरो नहीं मैं तुम्हारे कार्य से प्रसन्न होकर तुम्हें तलवार सिखाने आया हूँ। उस रात से वह राक्षस यूशोवाका को तलवार सिखाने लगा। कुछ ही दिनों में यूशीवाका ने राक्षस की सब कला जान ली और वह सरलता पूर्वक दस बीस राक्षसों का सामना करने लगा।

जब यह १५ वर्ष का हुआ तो जापानी राजधानी के बाहर हिएई पर्वत पर मुसाशीबो बेनकी नामक एक बड़ा डाकू आया। वह बड़ा निर्दयी था और प्रजा के साथ बड़ा उत्पात करता था। उसका नाम सुन कर लोग

कांपते थे। वह क्यूटो के गोजो पुल पर रोज जाता था और लोगों से तलवार छीन लेता था यदि तलवार वाला जरा भी इंकार करता तो वह उसे शीघ्र मार डालता था उसके भय के कारण लोग उस मार्ग से रात को नहीं जाते थे।

जब यूशीवाका को बेनकी का समाचार मिला तो वह उससे भेंट करने के लिये उतावला हो गया। वह ऐसे वीर पुरुष को अपना सहायक बनाना चाहता था। एक दिन वह संध्या समय पुल पर गया। चांदनी रात थी। उसके सामने से काला वस्त्र पहने बेनकी (लम्बा तगड़ा राक्षस) आया। उसने यूशीवाका को नवयुवक और कोमल बालक जान कर उसे न छेड़ने का इरादा किया परन्तु बालक स्वयम् उसे छेड़ने के इरादे से एक धक्का लगाया। शीघ्र ही बेनकी ने तलवार खींची और वार किया परन्तु बालक पैतरा बदल कर पीछे पहुँचा और वार खाली गया। उसने दुबारा वार किया तो बालक पुल के ऊपर छलांग मार कर पहुंचा और कहा मैं इधर हूँ। दो वार खाली गया। बेनकी बड़ा हैरान था कि मामला क्या है। उसका एक वार भी कभी
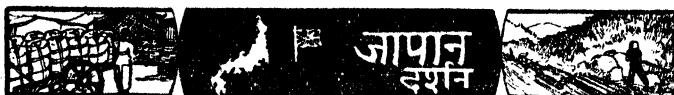
खाली नहीं गया था। जब बेनकी आगे मारता तो बालक पीछे चला जाता और जब पीछे मारता तो वह आगे आ जाता था। आखिर बालक ने बेनकी की तलवार हाथ से गिरा दी और जब वह अपनी तलवार लेने के लिये झुका तो वह पीछे से उसके ऊपर चढ़ बैठा।

आखिर बेनकी ने लड़के से पता पूछा और जब उसे मालूम हुआ कि यह योशीतोमो का पुत्र है तो वह उसका सहकारी हो गया।

यूशावाका दूसरे सहकारी ढूंढ़ रहा था। उसने कैंत्राई के प्रसिद्ध जनरल हिदेहीरा का नाम सुना। वह बड़ा बहादुर वीर था। बेनकी से उसने हिदेहीरा से भेंट करने की सलाह ली और दोनों उसके घर गये। मार्ग में अतसूता के मन्दिर में यूशीवाका ने अपने सिर के अगले भाग के बाल बनवाये और अपना नाम बदल कर यूशितसूने रक्खा। युवा पर जापानी वीरों को मन्दिर में आकर बाल बनवाना तथा नाम बदलना आवश्यक था।

जब जनरल हिदेहीरा को मालूम हुआ कि योशितसूने, योशीतोमों का पुत्र है तो वह बड़ा खुश हुआ और उसने योशितसूने और बेनकी का बड़ा आदर किया।

ठीक उसी समय यूशितसुने का सबसे बड़ा भाई योरीतोमो ने तैरा के विरुद्ध बलवा कर दिया। वह इदज़ द्वीप को देश निकाले की सजा देकर भेजा गया था। उसके पास एक बड़ी सेना थी। योशितसुने अपने बड़े भाई के पास गया और वहां उसने अपने वीरता का परिचय दिया। उसके भाई ने उसकी परीक्षा ली। वह परीक्षा में उत्तीर्ण हुआ और खौलते पानी का बर्तन लेकर कमरे से एक ओर से दूसरी ओर तक सरलता पूर्वक चला गया।

सभी लोग यूशितसूने की नेतृत्व में कियोमोरी के विरुद्ध लड़ने के लिये गये तैरा जाति वालों को कई स्थानों पर हार हुई। कियोमोरी और उसके सहायक सभी सेनापति मारे गये। तैरा जाति का झंडा नीचे हो गया और राजधानी पर मिनामोटो जाति का अधिकार हो गया। इस प्रकार यूशितसूने ने अपने पिता का बदला लिया और अपने माता की आत्मा को शान्त किया।

यूशितसूने की वीरता की कहानियां जापान में प्रसिद्ध हैं। इसका जापानी इतिहास में बहुत ऊँचा है। जापानी लोग उसकी याद बड़े आदर तथा भक्ति के साथ करते हैं।

जापान के नगर

जापान में लगभग २१ नगर ऐसे हैं जिनकी जन-संख्या एक लाख से अधिक है और ३४ नगरों की

टोकियो की सड़क का एक दृश्य। दूकानों पर विज्ञापनों के अक्षर ऊपर से नीचे को लिखे हुये हैं।

जनसंख्या ५० हज़ार से अधिक है। टोकियो जापान का सब से बड़ा नगर तथा राजधानी है। इस नगर की

नवीन टोकियो

जनसंख्या २० लाख से ऊपर है। यह नगर जापान के सब से अधिक चौड़े मैदान के बीच में बसा हुआ है। नगर के अन्दर बड़ी बड़ी लम्बी चौड़ी सड़कें हैं। यहां से उत्तर, दक्षिण और पहाड़ के उस पार पश्चिमी किनारे पर बसे हुये निगोया नगर को मार्ग गये हैं।

याकोहामा जापान का सबसे बड़ा बन्दरगाह है। याकोहामा से व्यापारिक समुद्री मार्ग संसार के सभी भागों को जाते हैं। संसार के प्रत्येक भाग के जहाज़ याकोहामा बन्दरगाह पर ठहरते हैं। १९२३ ई० में याको-हामा में बड़ा भारी भूकम्प आया था जिससे समस्त नगर नष्ट हो गया था। नया नगर फिर से बसाया गया।

ओसाका जापान का एक बड़ा कारबारी नगर तथा बन्दरगाह है। इस नगर की जन-संख्या २० लाख से अधिक है बिवा झील के पास क्योटो नगर है। यह नगर जापान की पुरानी राजधानी थी।

जापान एक समुद्री देश है इसी कारण वहां पर विदेशी जहाज आकर ठहरते हैं।

देश दर्शन

कोबे, डैरेन, नागासाकी, शिमोनोसेकी, मोजी, ओतारू, मुरोस, हाकोडेर, योकैची, तसूरूगा, करतसू, कुचितोदसू, कीलङ्ग, तामसूई, नीगाता, अओमोरी, कुशीरो, ताकीव, एनपिंडा चिमोल्फो और फूसन जापान के दूसरे प्रसिद्ध नगर तथा बन्दरगाह हैं।